RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30/-

प्रेरणा विचार

मासिक
चैत्र-वैशाख, विक्रम संवत् 2083 (अप्रैल -2026)
पृष्ठ-36, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

इतिहास के निर्णायक मोड़ पर खड़ा विश्व

अप्रैल–2026

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1 चैत्र शु. 14	2 चैत्र शु. 15	3 वैशाख कृ. 1	4 वैशाख कृ. 2
5 वैशाख कृ. 3	6 वैशाख कृ. 4	7 वैशाख कृ.5	8 वैशाख कृ. 6	9 वैशाख कृ. 7	10 वैशाख कृ. 8	11 वैशाख कृ.9
12 वैशाख कृ. 10	13 वैशाख कृ. 11	14 वैशाख कृ. 12	15 वैशाख कृ. 13	16 वैशाख कृ. 14	17 वैशाख कृ. 30	18 वैशाख शु. 1
19 वैशाख शु. 2	20 वैशाख शु. 3	21 वैशाख शु. 4	22 वैशाख शु. 5-6	23 वैशाख शु. 7	24 वैशाख शु. 8	25 वैशाख शु. 9
26 वैशाख शु. 10	27 वैशाख शु. 11	28 वैशाख शु. 12	29 वैशाख शु. 13	30 वैशाख शु. 14		

अप्रैल 2026 त्यौहार

चैत्र - वैशाख 2083

01 बुधवार	अन्वाधान	02 बृहस्पतिवार	हनुमान जयन्ती, हनुमान जन्मोत्सव, चैत्र पूर्णिमा, इष्टि
05 रविवार	विकट संकष्टी	13 सोमवार	वरूथिनी एकादशी
14 मंगलवार	मेष संक्रान्ति, सोलर नववर्ष	15 बुधवार	बुध प्रदोष व्रत
17 शुक्रवार	दर्श अमावस्या, अन्वाधान, वैशाख अमावस्या	18 शनिवार	इष्टि, चन्द्र दर्शन
19 रविवार	परशुराम जयन्ती, अक्षय तृतीया	23 बृहस्पतिवार	गंगा सप्तमी
25 शनिवार	सीता नवमी	27 सोमवार	मोहिनी एकादशी
28 मंगलवार	भौम प्रदोष व्रत	30 बृहस्पतिवार	नृसिंह जयन्ती

प्रेरणा विचार

वर्ष -4, अंक - 04

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
अनिल त्यागी

प्रबंध निदेशक
बिजेन्द्र कुमार गुप्ता

सलाहकार मंडल
श्याम किशोर

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
प्रेरणा भवन, सी-56/20, सेक्टर-62,
नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851
मोबाइल : 9354133708,9354133754
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

संघ द्वारा चलाए जा रहे पंच परिवर्तन कार्यक्रम से समाज परिवर्तन सम्भव है -05

भारतीय संसद में विपक्ष का व्यवहार-12

बदलती अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और वैश्विक उथलपुथल -16

धर्म, समाज, परिवार और प्रकृति से जोड़ते अप्रैल के पर्व और उत्सव -28

द केरला स्टोरी 2: अनसुनी दास्तान.....07

भारत की ऊर्जा सुरक्षा भाभा के विजन से शांति की वास्तविकता तक.....08

इतिहास के निर्णायक मोड़ पर खड़ा विश्व.....10

भविष्य का ऊर्जा परिदृश्य किसका परमाणु ऊर्जा या अक्षय ऊर्जा?.....14

विद्वत्ता से आर्थिक सशक्तिकरण तक नारी.....18

जीवन मूल्य सहेजती, परिवार परम्परा.....20

जब अभिनेत्री मुमताज ने कहा- "मुसलमान हिंदुओं से बेहतर कैसे हो जाते हैं?".....22

कुरुक्षेत्र के युद्ध का सबसे प्रलयंकारी 14 वां दिन.....24

जैव विविधता का गहराता संकट.....26

मैदान से स्क्रीन तक : बच्चों का बदलता खेल-संसार.....30

न्यूज स्टोरी.....32

जहां वाणी में मर्यादा होती है वहां संबन्धों की मधुरता कभी कम नहीं होती.....34

रणभूमि से पहले मनभूमि में जीत जरूरी

ईरान तथा इस्राइल-अमेरिका युद्ध के 12 वें दिन 8 फरवरी को इस्रायली हमलों में ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की हत्या के बाद जब पाकिस्तान के शिया मुस्लिमों ने ईरान के समर्थन में प्रदर्शन किये तो इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ पाकिस्तान के फील्ड मार्शल असीम मुनीर ने शिया धर्मगुरुओं की बैठक में इसे अस्वीकार्य करार देते हुए चेतावनी दी कि जो पाकिस्तानी, ईरान और खामेनेई का समर्थन करना चाहते हैं वो ईरान चले जाएं। स्थति यह है कि आज कोई इस्लामिक देश ईरान के साथ नहीं खड़ा है और न ही ईरान किसी मुस्लिम देश के साथ खड़ा है। इस्लामिक देशों के अंतर्राष्ट्रीय संगठन, ओआईसी ने भी अभी तक खामनेई की हत्या की न तो निंदा की है और न ही ईरान का समर्थन। परंतु 3.2 प्रतिशत मुस्लिम जनसंख्या वाले ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बानीज जब ईद पर सिडनी स्थित लेकम्बा मस्जिद पहुंचते हैं तो उन्हें अमेरिकी कुत्ते वापस जाओ, सड़ेला कुत्ता, नरसंहार समर्थक जैसे नारों के साथ पिछले दरवाजे से भागकर जान बचाने जैसी स्थति का सामना करना पड़ता है। 14.2 प्रतिशत मुस्लिम जनसंख्या वाले भारत में भी कश्मीर, भोपाल, लखनऊ, जयपुर, और अंबाला जैसे शहरों में काली पट्टी बांधकर खामेनेई की हत्या तथा ईरान पर इस्रायली- अमेरिकी हमलों के विरोध में छाती पीटकर मातमपुर्सी के दृश्य दिखे। ऐसे में इन प्रदर्शनकारियों को यह अवश्य बताना चाहिए कि, वर्ष 1989-90 में कश्मीरी हिंदुओं के नरसंहार और पलायन के समय, पहलगाम में 26 पर्यटकों की नृशंस हत्या के समय, और पिछले 30 से आधिक वर्षों से भारत में पाकिस्तानी आतंकवाद की अनगिनित वीभत्स घटनाओं के समय उनकी मानवीय भावनाओं का ज्वार क्यों नहीं उमड़ा? मथुरा में गौरक्षक फरसा बाबा की संदिग्ध मौत के बाद इनके होंठ क्यों सिले हुए हैं? रमजान के महीने में पाकिस्तान द्वारा अफगानिस्तान के नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र पर हमला कर 400 मरीजों की हत्या के बाद इनके होंठ क्यों सिले हुए हैं?

प्रमुख देशों की स्वार्थपरता, संसाधनों पर गैरकानूनी आधिपत्य और उभरते देशों को युद्ध में फसाकर कमजोर बनाए रखने की प्रवृति के कारण दुनिया में युद्ध क्षेत्रों की संख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसे युद्धोन्मादी दौर में भारत को धैर्य बनाए रखने और षड्यंत्रों से सावधान रहने की आवश्यकता है। 80 प्रतिशत हिंदुओं वाले भारत की 147 करोड़ जनसंख्या तथा 32 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल की तुलना में ईरान 99 प्रतिशत मुस्लिम बहुसंख्यक 9.32 करोड़ जनसंख्या (भारत का 16 वां हिस्सा) तथा 16 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल (भारत का आधा हिस्सा) वाला देश है। वहीं 73 प्रतिशत यहूदी बहुसंख्यक इस्राइल की जनसंख्या लगभग एक करोड़ (भारत का 147 वां हिस्सा) तथा क्षेत्रफल मात्र 22145 वर्ग किलोमीटर (भारत का 145 वां हिस्सा) है। विश्व मानचित्र में नगण्य सा दिखने वाला इस्राइल एक साथ ईरान, फिलिस्तीन (हमास), लेबनान (विशेषकर हिजबुल्लाह), यमन (हूती विद्रोही) और सीरिया जैसे मोर्चों पर दुश्मनों के दांत खट्टे कैसे कर पा रहा है? निसंदेह यह इस्राइल और उसके नागरिकों की राष्ट्रप्रथम नीति, सोच और संकल्प से ही संभव है। महाभारत में कहा गया है कि सभी की अपनी-अपनी रणभूमि होती है। भारत के प्रत्येक नागरिक, संस्था, संगठन आदि को अपनी रणभूमि में जीत सुनिश्चित करनी होगी, चाहे वो अभियंता, शिक्षक, डॉक्टर, व्यवसायी, प्रशासक, वैज्ञानिक, किसान, जवान, मजदूर कोई भी हों।

दुश्मनों की तैयारी पाकिस्तान के उस जासूसी नेटवर्क से लगाई जा सकती है जो भारत की सैन्य टुकड़ियों की गतिविधियों के लाइव प्रसारण के उद्देश्य से भारत के सामरिक स्थानों जैसे छावनी तथा रेलवे स्टेशन आदि पर सौर ऊर्जा युक्त सीसीटीवी स्थापित करते हुए पकड़ा गया। हर भारतीय को ऐसे नापाक मंसूबों को नाकाम करने का संकल्प लेना होगा। युद्ध रणभूमि से पहले मनभूमि में जीतना होता है। भगवान श्रीकृष्ण का गीता ज्ञान मूलतः अर्जुन को आसक्ति छोड़ कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित कर उसकी मनभूमि तैयार करने के लिए ही था। भारत के प्रत्येक नागरिक को गांधारी वाली पट्टी आँखों से उतारकर सच को देखना, उसका सामना करना और उसे कहना होगा। दिनकर जी के शब्दों में, 'समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध, जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनका भी अपराध'। आँखें रहते हुए अंधे बने रहने की परिणति द्वापर में जिस महाभारत के रूप में हुई, हमें मिलकर वर्तमान दुनिया को उस परिणति से बचाना होगा। विश्व कल्याण के इस कार्य की सर्वाधिक सफलता भारत के नेतृत्व में ही संभव है। (समस्त संदर्भ स्रोतों को कृतज्ञता) ■

संघ द्वारा चलाए जा रहे पंच परिवर्तन कार्यक्रम से समाज परिवर्तन सम्भव है

प्रहलाद सबनानी
सेनानिवृत्त उप महाप्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक

आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं और यदि हम संघ की 100 वर्षों की यात्रा पर दृष्टि डालें, तो ध्यान में आता है कि संघ के स्वयसेवकों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विचार और क्रियाशीलता के स्तर पर सक्रिय योगदान दिया है। वे अनेक क्षेत्रों में परिवर्तन के वाहक भी बने हैं। प्रारम्भ का सीमित संघ कार्य, समय के साथ व्यापक होता गया है। समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को समझते हुए स्वयंसेवक विविध आयामों में अपने सहयोगियों के साथ क्रियाशील बने हैं। परिणामतः संघ के उद्देश्य के अनुरूप, देश में हिंदुत्व का जागरण करने की दिशा में विशेष प्रगति हुई है। हिंदुत्व के जागरण से, समाज में जाति, वर्ग, भाषा इत्यादि के आधार पर होने वाले अनेक प्रकार के भेदभाव, धीरे धीरे कम होने लगे हैं। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन, अयोध्या मंदिर में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा, कुम्भ जैसे विराट आयोजन इत्यादि अनेक ऐसे अवसर आए हैं - जहां हिंदू समाज का एक संगठित, भव्य और उच्च आदर्शों से युक्त स्वरूप सामने आया है। यह दृश्य समाज में आत्मविश्वास जगाने वाला बन रहा है। हम सब मिलकर देश के भविष्य को उज्जवल एवं सुदृढ़ बना सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सकारात्मक वातावरण निर्मित कर सकते हैं। इसलिए ये हमारी राष्ट्रीय एकात्मता को सुदृढ़ करने वाले आयोजन सिद्ध हुए हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष केवल इतिहास की उपलब्धियां नहीं है, बल्कि भविष्य की दिशा का संकल्प हैं।

आज, जब हम राष्ट्रीयस्वयं सेवक संघ की 100 वर्षों की इस यात्रा को देखते हैं, तो यह भी स्पष्ट होता है कि समाज में जिस परिवर्तन के लिए संघ के स्वयंसेवक सक्रिय रहे हैं वह अब दिखाई देने लगा है। हिंदुत्व और इसकी परम्पराओं पर लोगों का विश्वास बढ़ा है। समाज के अनेक लोग इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं और इसका अनुभव भी कर रहे हैं। हिंदुत्व की इस जागृति के कारण लोग अब हिंदू होने में गर्व का अनुभव कर रहे हैं। एक समय था जब सार्वजनिक जीवन में हिंदू समाज की कमियों को ही उजागर किया जाता था, जिससे अनेक लोग हिंदुत्व की अच्छाईयों को पहचान नहीं पाए, किंतु अब स्थिति बदल रही है। लोग अपने पूर्वजों के धर्म और परम्पराओं को महत्व देने लगे हैं। वे अपने बच्चों के नामकरण से लेकर विवाह पद्धति तक में हिंदू संस्कारों का समावेश कर रहे हैं। घर की परम्पराओं को आदरपूर्वक अपनाया जा रहा है।

उक्त वर्णित सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्य है - एक सच्चरित्र, प्रामाणिक और संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण करना। ऐसी पीढ़ी समाज का वातावरण सुधार कर घर और समाज में सुख शांति स्थापित कर सकती है। इसलिए, इन मूल्यों और संस्कारों को महत्व देने और उन्हें अपने जीवन में उतारने के प्रयास आज घर-घर में होने लगा हैं। लोग अब ऐसे सभी मंचों और माध्यमों से जुड़ने के लिए प्रयत्नशील हैं जो इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। संघ को भी लोग इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण माध्यम मानने लगे हैं और विश्वासपूर्वक संघ से जुड़ने का उत्साह दिखा रहे हैं। जैसे-जैसे हिंदुत्व पर विश्वास बढ़ रहा है, वैसे-वैसे भारत के प्रति श्रद्धा और विश्वास, व्यापक और गहरा हो रहा है। संघ का मानना है कि "वसुधैव कुटुंबकम्" के आदर्श पर चलकर भारत न केवल अपने समाज को सशक्त करेगा, बल्कि पूरी दुनिया को शांति, सद्भाव और सहयोग का संदेश देकर विश्वगुरु की भूमिका निभाएगा। यह सब भारतीय समाज में परिवर्तन लाकर ही

फलिभूत हो सकता है। संघ द्वारा अपनी स्थापना के समय लिए गए संकल्पों को शीघ्र ही पूर्ण करने के उद्देश्य से अपने इस शताब्दी वर्ष में कुछ विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय समाज को (1) अपने नागरिक कर्तव्यों के प्रति सजग करने, (2) पर्यावरण के प्रति सचेत करने, (3) नागरिकों में स्व के भाव को जगाने एवं स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा देने, (4) कुटुम्ब प्रबोधन के माध्यम से पारिवारिक भावना जागृत करने एवं (5) समाज में समरसता के भाव को सुदृढ़ करने के लिए गम्भीर प्रयास किए जा रहे हैं। इस कार्यक्रम को "पंच परिवर्तन" का नाम दिया गया है और इसका आह्वान परम पूजनीय सरसंघचालक श्री मोहन जी भागवत द्वारा किया गया है ताकि अनुशासन एवं देशभक्ति से ओतप्रोत युवा वर्ग अनुशासित होकर अपने देश को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य करे। इस पंच परिवर्तन कार्यक्रम को सुचारू रूप से लागू कर समाज में बड़ा परिवर्तन लाया जा सकता है।

व्यवहार में पंच परिवर्तन को समाज में किस प्रकार लागू करना है इस हेतु हम समस्त भारतीय नागरिकों को मिलकर प्रयास करने होंगे, क्योंकि पंच परिवर्तन केवल चिंतन, मनन अथवा बहस का विषय नहीं है बल्कि हमें अपने व्यवहार में उतारने की आवश्यकता है। उक्त पांचों आचरणात्मक बातों का समाज में होना सभी चाहते हैं, अतः छोटी-छोटी बातों से प्रारंभ कर उनके अभ्यास के द्वारा इस आचरण को अपने स्वभाव में लाने का सतत् प्रयास अवश्य करना होगा। जैसे, समाज के आचरण में, उच्चारण में संपूर्ण समाज और देश के प्रति अपनत्व की भावना प्रकट हो, प्रत्येक घर में सप्ताह में कम से कम एक बार पूजा या धार्मिक आयोजन हो एवं अपने परिवार के बच्चों के साथ बैठकर महापुरुषों के सम्बंध में सप्ताह में कम से कम एक घंटे चर्चा हो, परिवार के सभी सदस्यों में नित्य मंगल संवाद, संस्कारित व्यवहार व संवेदनशीलता बनी रहे, बढ़ती रहे व उनके द्वारा समाज की सेवा होती रहे, आदि बातों का ध्यान रखकर कुटुंब प्रबोधन जैसे विषय को आगे बढ़ाया जा सकता है।

मंदिर, पानी, श्मशान के सम्बंध में कहीं भेदभाव बाकी है, तो वह शीघ्र ही समाप्त होना चाहिए। हम लोग अपने परिवार सहित त्यौहारों के समय अनुसूचित जाति के बंधुओं के घर जाएं और उनके साथ चाय पान करें। साथ ही, हम अनुसूचित जाति के बंधुओं को सपरिवार अपने परिवार में बुलाकर सम्मान प्रदान करें। कुल मिलाकर समस्त समाज एक दूसरे के त्यौहारों में शामिल हों ताकि आपस में भाई चारा बढ़े एवं देश में सामाजिक समरसता स्थापित हो सके।

सृष्टि के साथ संबंधों का आचरण अपने घर से पानी बचाकर, प्लास्टिक हटाकर व घर आंगन में तथा आसपास हरियाली बढ़ाकर हो सकता है। अपने घरों में जल का कोई अपव्यय नहीं हो रहा है एवं अपने परिवार में हरियाली की चिंता की जा रही है। अपने घर में, रिश्तेदारी में, मित्रों के यहां सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने का आग्रह किया जा रहा है आदि बातों पर ध्यान देकर देश में पर्यावरण को सुधारा जा सकता है।

आज, जब हम राष्ट्रीयस्वयं संघ की 100 वर्षों की इस यात्रा को देखते हैं, तो यह भी स्पष्ट होता है कि समाज में जिस परिवर्तन के लिए संघ के स्वयंसेवक सक्रिय रहे हैं वह अब दिखाई देने लगा है। हिंदुत्व और इसकी परम्पराओं पर लोगों का विश्वास बढ़ा है। समाज के अनेक लोग इस तथ्य को स्वीकार कर रहे हैं और इसका अनुभव भी कर रहे हैं। हिंदुत्व की इस जागृति के कारण लोग अब हिंदू होने में गर्व का अनुभव कर रहे हैं।

स्वदेशी के आचरण से स्व-निर्भरता व स्वावलंबन बढ़ता है। फिजूलखर्ची बंद होनी चाहिए, देश का रोजगार बढ़े व देश का पैसा देश में ही काम आए, इस बात का ध्यान देश के समस्त नागरिकों को रखना चाहिए। इसीलिए कहा जा रहा है कि स्वदेशी का आचरण भी घर से ही प्रारंभ होना चाहिए। समस्त नागरिकों के घर में स्वदेशी उत्पाद ही उपयोग होने चाहिए।

देश में कानून व्यवस्था व नागरिकता के नियमों का भरपूर पालन होना चाहिए तथा समाज में परस्पर सद्भाव और सहयोग की प्रवृत्ति सर्वत्र व्याप्त होनी चाहिए। इन्हें हमारे नागरिक कर्तव्यों के रूप में देखा जाना चाहिए। समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन हेतु हम सबको मिलकर प्रयास करने होंगे। विशेष रूप से युवाओं में नशाबंदी समाप्त करने के लिए, मृत्यु भोज रोकने के लिए तथा विभिन्न समाजों में व्याप्त दहेज की कुप्रथा समाप्त करने के गम्भीर प्रयास हम समस्त नागरिकों को मिलकर ही करने होंगे।

समाज की एकता, सजगता व सभी दिशा में निस्वार्थ उद्यम, जनहितकारी शासन व जनोन्मुख प्रशासन स्व के अधिष्ठान पर खड़े होकर परस्पर सहयोगपूर्वक प्रयासरत रहते है, तभी राष्ट्रबल वैभव सम्पन्न बनता है। बल और वैभव से सम्पन्न राष्ट्र के पास जब हमारी सनातन संस्कृति जैसी सबको अपना कुटुंब मानने वाली, तमस से प्रकाश की ओर ले जाने वाली, असत् से सत् की ओर बढ़ाने वाली तथा मृत्यु जीवन से सार्थकता के अमृत जीवन की ओर ले जाने वाली संस्कृति होती है, तब वह राष्ट्र, विश्व का खोया हुआ संतुलन वापस लाते हुए विश्व को सुख शांतिमय नवजीवन का वरदान प्रदान करता है।

संघ की दृष्टि बहुत स्पष्ट है कि सम्पूर्ण भारत की पहचान जिससे है, उस आध्यात्म आधारित एकात्म और सर्वांगीण जीवन दृष्टि को दुनिया हिंदुत्व अथवा हिंदू जीवन दृष्टि के नाते जानती है, उस हिंदुत्व को जगाकर सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में जोड़कर निर्दोष और गुणवान हिंदू समाज के संगठन का यह कार्य जो वर्ष 1925 में प्रारम्भ हुआ वह आज भी निरन्तर जारी है और आगे भी जारी रहेगा। ■

द केरला स्टोरी 2: अनसुनी दास्तान

आशीष कुमार 'अंशु'
स्वतंत्र लेखक

27 फरवरी 2026 को रिलीज हुई द केरला स्टोरी 2 : गोज बियॉन्ड ने न केवल बॉक्स ऑफिस पर अपनी मजबूत पकड़ बनाई है, बल्कि समाज के उस पैटर्न को एक्सपोज किया है जिसे वर्षों से दबाया जाता रहा। यह फिल्म उन हजारों बहनों की कहानी है जो प्रेम के नाम पर जाल में फंसकर अपनी पहचान, परिवार और सम्मान खो बैठीं। निर्देशक कामाख्या नारायण सिंह और निर्माता विपुल अमृतलाल शाह ने इस बार और गहराई से इस मुद्दे को छुआ है, बिना किसी झूठी पब्लिसिटी के। जहां पहली फिल्म ने जागरूकता फैलाई, वहीं दूसरी फिल्म उन पीड़िताओं को आवाज देती है जो अब तक चुप थीं। फिल्म की कास्ट - उल्का गुप्ता (सुरेखा के रूप में), अदिति भाटिया (दिव्या), ऐश्वर्या ओझा (नेहा), सुमित गहलोत (सलीम), अर्जन सिंह औजला (फैजान) और अन्य - ने अभूतपूर्व अभिनय किया है। इन कलाकारों ने भावनाओं की गहराई को इतनी सशक्तता से उकेरा है कि दर्शक खुद को कहानी में खो देता है।

कास्ट की तारीफ : जीवंत किरदारों का कमाल - फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसकी कास्ट है। उल्का गुप्ता ने सुरेखा के किरदार में वह दर्द और संघर्ष दिखाया है जो देखकर आंखें नम हो जाती हैं। उनकी आंखों में छिपी मासूमियत और बाद में उठता गुस्सा - दोनों ही कमाल के हैं। अदिति भाटिया ने दिव्या के रूप में एक मजबूत, स्वतंत्र लड़की की छवि को बखूबी निभाया, जो प्रेम के जाल में फंसकर टूटती है लेकिन हार नहीं मानती। ऐश्वर्या ओझा ने नेहा के किरदार में संवेदनशीलता और साहस का बेहतरीन मिश्रण पेश किया। पुरुष कलाकारों में सुमित गहलोत और अर्जन सिंह औजला ने नकारात्मक किरदारों को इतनी सूक्ष्मता से निभाया कि वे नफरत के पात्र लगते हैं, लेकिन अतिरंजित नहीं। सहायक कलाकारों ने भी कहानी को मजबूती दी। कुल मिलाकर, यह कास्ट फिल्म को एक भावनात्मक धमाका बनाती है - जहां हर अभिनेता अपनी भूमिका से ज्यादा जीता है।

बॉक्स ऑफिस पर धमाल : सच्चाई की जीत- फिल्म ने रिलीज के नौवें दिन (शनिवार) को 3.75 करोड़ का कलेक्शन किया, जबकि शुक्रवार को 2.75 करोड़। कुल मिलाकर अब तक का टोटल 29.75 करोड़ (कुछ रिपोर्ट्स में 30 करोड़ ग्रॉस पार) हो चुका है। यह उपलब्धि इसलिए खास है क्योंकि फिल्म ने अस्सी, ओ रोमियो, चरक जैसी अन्य रिलीज को पीछे छोड़ दिया। पहले हफ्ते में 22-23 करोड़ के आसपास रहकर भी वीकएंड पर मजबूत उछाल दिखाया। बजट लगभग 28-30 करोड़ होने के बावजूद फिल्म ने 90 प्रतिशत से ज्यादा रिकवर कर लिया और सफलता की ओर बढ़ रही है। यह मुंह-जुबानी प्रचार की ताकत है - दर्शक खुद कह रहे हैं कि यह देखने लायक है। कोई फेक न्यूज या बच्चों के अपहरण जैसी झूठी अफवाहें फैलाने की जरूरत नहीं पड़ी, जैसा कुछ अन्य मामलों में हुआ। फिल्म ने अपनी सच्चाई से ही जगह बनाई।

फिल्म को लेकर मुख्य आलोचनाएं तीन हैं - प्रोपेगैंडा, इस्लामोफोबिया और 'लव जिहाद' का काल्पनिक नैरेटिव।

सबसे बड़ा आरोप है कि 'लव जिहाद' एक काल्पनिक साजिश है। लेकिन फिल्म यह नहीं कहती कि सभी मुस्लिम ऐसा करते हैं - यह कुछ खास पैटर्न और संगठित प्रयासों पर फोकस करती है। वास्तविक घटनाएं, जैसे केरल से ISIS में शामिल होने वाली महिलाओं की कहानियां (2016-2018 में दर्ज मामले), और कई हाई कोर्ट ऑब्जर्वेशंस (जैसे हदिया केस) इस पैटर्न की ओर इशारा करते हैं। फिल्म व्यक्तिगत कहानियों पर आधारित है, न कि सामान्यीकरण पर। आलोचक कहते हैं कि यह मुस्लिमों को विलेन बनाती है - लेकिन फिल्म स्पष्ट करती है कि समस्या कुछ कट्टर तत्वों में है, न कि पूरी कम्युनिटी में। यह उन बहनों की आवाज है जो शिकार हुईं, न कि नफरत फैलाने का माध्यम।

दूसरा आरोप - फिल्म केरल को बदनाम करती है। लेकिन फिल्म किसी राज्य को टारगेट नहीं करती; यह एक सोशल पैटर्न दिखाती है जो कहीं भी हो सकता है। केरल में इंटर-फेथ मैरिजेस आम हैं, लेकिन जब जबरन कन्वर्जन या रैडिकललाइजेशन शामिल हो, तो सवाल उठना लाजिमी है। कई पीड़िताओं ने अपनी कहानियां शेयर की हैं - फिल्म उन्हें प्लेटफॉर्म देती है।

तीसरा - यह प्रोपेगैंडा है। लेकिन जहां केरला स्टोरी के नाम से आई पहली फिल्म पर लव जिहाद के झूठे आंकड़े पेश करने का आरोप लगा था, वहीं दूसरी फिल्म रिसर्च-बेस्ड है और कोई अतिरंजित क्लेम नहीं करती। यह उन महिलाओं की रक्षा करती है जो प्रेम के नाम पर शोषण का शिकार हुईं। आलोचक इसे राजनीतिक बताते हैं, लेकिन फिल्म ने कोई राजनीतिक एजेंडा नहीं चलाया बस सच्चाई दिखाई। दिल्ली में बच्चों के अपहरण जैसी फेक स्टोरी फैलाने वाले ही असल में पैनिक क्रिएट करते हैं, जबकि इस फिल्म ने ऐसा कुछ नहीं किया।

सिनेमा जो समाज को जगाता है : द केरला स्टोरी 2 एक फिल्म से ज्यादा है - यह एक आंदोलन है। यह उन बहनों को सम्मान देती है जिनकी कहानियां दबा दी गईं। कास्ट का शानदार अभिनय, बॉक्स ऑफिस पर स्थिर प्रदर्शन और सच्चाई का साहस - सब कुछ मिलकर इसे यादगार बनाते हैं। आलोचनाएं आएंगी, लेकिन सच्चाई हमेशा जीतती है। यह फिल्म देखिए, क्योंकि यह सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि जागरूकता है। उन हजारों बहनों के लिए जो अब तक चुप थीं- यह उनकी आवाज है।

भारत की ऊर्जा सुरक्षा भाभा के विजन से शांति की वास्तविकता तक

ब्रिगेडियर संजय अग्रवाल
पूर्व सुरक्षा सलाहकार, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

भारत की विश्वसनीय, कम कार्बन वाली ऊर्जा सुरक्षा की खोज में थोरियम एक रणनीतिक साधन के रूप में फिर से उभर रहा है, लेकिन अगर इसे मात्र वादे से बिजली संयंत्र में तब्दील करना है, तो नीति, प्रौद्योगिकी और संस्थागत कमियों को शीघ्रता से दूर करना होगा। थोरियमरू वैश्विक वादा, भारतीय विरासत वैश्विक स्तर पर, थोरियम को लंबे समय से यूरेनियम के एक सुरक्षित और अधिक प्रचुर विकल्प के रूप में देखा जाता रहा है। 1950–70 के दशक में अमेरिका और यूरोप में किए गए प्रयोग कभी भी वाणिज्यिक पैमाने पर उत्पादन में तब्दील नहीं हुए क्योंकि सस्ते यूरेनियम, हल्के जल रिएक्टरों के प्रभुत्व और हथियारों से जुड़े ईंधन चक्रों ने निवेश को अन्यत्र स्थानांतरित कर दिया। भारत एक उल्लेखनीय अपवाद था। डॉ. होमी भाभा का तीन चरणों वाला परमाणु कार्यक्रम स्पष्ट रूप से इसके विशाल थोरियम भंडार को ध्यान में रखकर बनाया गया था, जिसमें पहले चरण में प्राकृतिक यूरेनियम और भारी जल रिएक्टर, दूसरे चरण में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर और तीसरे चरण में थोरियम ईंधन से चलने वाली प्रणालियां शामिल थीं। फिर भी, भारत में भी बड़े पैमाने पर थोरियम का उपयोग अभी भी विलंबित है। संसदीय उत्तरों (2015) में अनुमान लगाया गया था कि वाणिज्यिक थोरियम रिएक्टरों को 2040 के दशक में सतत फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर (FBTR) के बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरू होने के 3–4 दशक बाद ही शुरू किया जा सकेगा - जिसका अर्थ है 2070–2080 की समयसीमा। आज, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) का उन्नत भारी जल रिएक्टर (AHWR) - जो लगभग 60 प्रतिशत ऊर्जा थोरियम से प्राप्त करता है - तकनीकी तत्परता और थोरियम विकास को जकड़े रखने वाली निरंतर 'पायलट-प्लांट की दुविधा' दोनों का प्रतीक है।

भारत की थोरियम योजनाएं क्यों विफल हुईं? : भारत की दीर्घकालिक परमाणु योजना में दूरदर्शिता की तुलना में अनुक्रम, संसाधन और राजनीतिक अर्थव्यवस्था में अधिक त्रुटियाँ थीं। तीन चरणों वाली रणनीति में ये मान्यताएँ थीं। भारी जल रिएक्टरों का तीव्र विस्तार, समय पर फास्ट ब्रीडर रिएक्टरों की तैनाती और जटिल ईंधन निर्माण में सक्षम औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र - ये मान्यताएँ प्रतिबंधों, वित्तपोषण संबंधी बाधाओं और परियोजना विलंबों के कारण बार-बार धराशायी हुईं। परमाणु ऊर्जा अधिनियम 1962 के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के प्रभुत्व ने एक बंद और सतर्क संस्कृति को जन्म दिया; नवाचार और विस्तार कुछ ही सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और अनुसंधान केंद्रों तक सीमित रहे, जहाँ प्रतिस्पर्धा का दबाव और वैश्विक एकीकरण न के बराबर था। इन कमियों के कारण योजना से अधिक समय तक कोयले/आयात पर निर्भरता बनी रही। जबकि प्रेशराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर (पीएचडब्ल्यूआर) (चरण 1) की क्षमता में वृद्धि हुई, प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (पीएफबीआर) और थोरियम चरण (चरण 2 और 3) पिछड़ गए।

शांति अधिनियम : हमारे परमाणु ढांचे का संरचनात्मक पुनर्स्थापन : सतत परमाणु ऊर्जा दोहन एवं विकास, भारत के रूपांतरण हेतु (शांति) अधिनियम (दिसंबर 2025) परमाणु ऊर्जा अधिनियम 1962 और परमाणु क्षति के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम 2010 का स्थान लेता है। यह अधिनियम भारतीय निजी कंपनियों को रिएक्टर बनाने, उनका स्वामित्व रखने और उन्हें संचालित करने तथा ईंधन निर्माण में भाग लेने की अनुमति देता है; जिसमें सरकार द्वारा निर्धारित सीमा तक यूरेनियम 235 का रूपांतरण, शोधन और संवर्धन शामिल है, जबकि 'संवेदनशील' गतिविधियों को राज्य के लिए आरक्षित रखा गया है। यह अधिनियम

एकल वैधानिक संचालक दायित्व सीमा से हटकर श्रेणीबद्ध दायित्व ढांचे की ओर अग्रसर है; जो अंतरराष्ट्रीय प्रथाओं के साथ अधिक निकटता से जुड़ा है और परियोजनाओं की ऋणयोग्यता में सुधार करता है। महत्वपूर्ण रूप से, शांति अधिनियम राष्ट्रीय सुरक्षा अपवादों के अधीन परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण अनुप्रयोगों के लिए पेटेंट की अनुमति देता है। इससे रिएक्टर डिजाइन, उन्नत सामग्री और ईंधन चक्र सेवाओं में पूंजी और प्रतिभा आकर्षित हो सकती है। थोरियम के लिए, यह तीन चरणों वाले सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के प्रभुत्व वाले मार्ग के समानांतर संयुक्त उद्यमों और निजी नेतृत्व वाले प्रदर्शन परियोजनाओं के लिए जगह खोलता है, जिससे समय-सीमा कम हो सकती है और जोखिम का विविधीकरण हो सकता है।

भारत की व्यापक ऊर्जा सुरक्षा रणनीति : भारत में थोरियम पर बहस नवीकरणीय और गैर-जीवाश्म स्रोतों में कहीं अधिक व्यापक विविधीकरण अभियान का हिस्सा है। दिसंबर 2024 तक, देश ने लगभग 209 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित कर ली थी, जो एक वर्ष पहले 180.8 गीगावाट थी, जिसमें अकेले 2024 में रिकॉर्ड 28.6 गीगावाट की वृद्धि हुई। सौर ऊर्जा ने इस वृद्धि में अग्रणी भूमिका निभाई, जो एक ही वर्ष में 73.3 गीगावाट से बढ़कर 97.9 गीगावाट हो गई, जबकि पवन ऊर्जा लगभग 48.2 गीगावाट तक पहुंच गई। विश्लेषण से पता चलता है कि यदि भारत भंडारण और ग्रिड उन्नयन के समर्थन से 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा लक्ष्य (अद्यतन राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान - एनडीसी के अनुसार) प्राप्त कर लेता है, तो वह नई कोयला क्षमता जोड़े बिना 2030 की बिजली मांग को पूरा कर सकता है। 2025 में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने घोषणा की कि भारत ने कुल बिजली उत्पादन में जीवाश्म ईंधन रहित ऊर्जा की हिस्सेदारी 50 प्रतिशत से अधिक पार कर ली है, जिससे उसने पेरिस समझौते की इस उपलब्धि को 2030 की समय सीमा से पांच साल पहले ही हासिल कर लिया है। सौर, पवन, जल, परमाणु और पारंपरिक तापीय ऊर्जा का यह मिश्रण कोयला और गैस निर्यातकों पर आयात निर्भरता को कम करने, जलवायु वित्त का लाभ उठाने और भारत को विनिर्माण और हरित हाइड्रोजन केंद्र के रूप में स्थापित करने की भू-राजनीतिक रणनीति का आधार है।

COP, सतत विकास लक्ष्य और G7 मानदंड : 2030 के राष्ट्रीय विकास घोषणापत्र (COP 21, पेरिस, 2015 में) के तहत, भारत ने दो बातों के लिए प्रतिबद्धता जताई थी- 2005 के स्तर से प्रति यूनिट जीडीपी उत्सर्जन तीव्रता में 45 प्रतिशत की कटौती करना; और 2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से स्थापित बिजली उत्पादन क्षमता का 50 प्रतिशत हासिल करना। ये दोनों लक्ष्य पेरिस समझौते में किए गए मूल वादों से आगे हैं- भारत ने 2019 तक उत्सर्जन तीव्रता में लगभग 33 प्रतिशत की कमी कर ली थी, और 2030 से काफी पहले ही 40 प्रतिशत गैर-जीवाश्म क्षमता के लक्ष्य को पार कर लिया था। 2025 के मध्य तक, सरकार ने निर्धारित समय से पांच साल पहले ही 50 गैर-जीवाश्म क्षमता के अधिक महत्वाकांक्षी लक्ष्य को पार कर लिया था, जिससे भारत पेरिस समझौते में की गई अपनी प्रारंभिक प्रतिबद्धताओं से लगभग नौ साल आगे निकल गया। जी 7 अर्थव्यवस्थाओं में से अधिकांश कोयले के चरणबद्ध समापन और नवीकरणीय ऊर्जा की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रही हैं, लेकिन अभी भी गैस पर अत्यधिक निर्भरता दिखा रही हैं और नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के मामले में 2022 में 0.9 किलोवाट से 2030 में 2.7 किलोवाट तक के तिगुने लक्ष्य की तुलना में उनकी महत्वाकांक्षा में कमी है; जापान को व्यापक रूप से पिछड़ा हुआ माना जाता है, जबकि यूरोपीय संघ के सदस्य देश और ब्रिटेन तुलनात्मक रूप से बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। इस प्रकार, भारत की गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता में शुरुआती उच्च प्रदर्शन जी 7 प्रणालियों के विपरीत है, जो प्रति व्यक्ति उच्च उत्सर्जन और आय के बावजूद, अभी तक गैस के उपयोग को शुद्ध शून्य बिजली समयसीमा के अनुरूप नहीं कर पाई हैं।

भारत को अभी क्या करने की आवश्यकता है : पहला, भारत को समयबद्ध तरीके से एएचडब्ल्यूआर श्रेणी के रिएक्टरों को चालू करके और उन्हें 500 गीगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा रोडमैप में एकीकृत करके थोरियम को प्रयोगशाला से सीमित पैमाने पर व्यावसायीकरण की ओर निर्णायक रूप से ले जाना होगा। इसके लिए आवश्यक होगारू यथार्थवादी लागत मॉडल, सुरक्षा और सामग्री पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, और निजी पूंजी को आकर्षित करने के लिए शांति परियोजना के निजी क्षेत्र के लिए खुलेपन का उपयोग करना। दूसरा, बिजली उत्पादन में कोयले की हिस्सेदारी, हालांकि क्षमता के संदर्भ में घट रही है, वास्तविक उत्पादन में अभी भी अधिक है। भारत को सौर और पवन ऊर्जा की उच्च हिस्सेदारी को बनाए रखने के लिए आक्रामक ग्रिड विस्तार, भंडारण, मांग-प्रतिक्रिया और लचीले गैस-सह-भंडारण समाधानों की आवश्यकता है, ताकि जीवाश्म ईंधन संपत्तियों में दीर्घकालिक निवेश न करना पड़े। तीसरा, शासन सुधारकृपारदर्शी परियोजना प्रक्रिया, भूमि और पारेषण की त्वरित स्वीकृति, और राज्य-केंद्र द्वारा लागत में स्पष्ट रूप से बाँटनाकृनवीकरणीय ऊर्जा की वर्तमान वृद्धि दर को बनाए रखने में प्रौद्योगिकी जितना ही महत्वपूर्ण होगा।

नीतिगत संदेश : भारत को थोरियम को एक रणनीतिक सुरक्षा कवच के रूप में देखना चाहिए जो चल रहे सौर, पवन और जलविद्युत परियोजनाओं का प्रतिस्थापन नहीं बल्कि पूरक हो, और शांति परियोजना परमाणु ऊर्जा के बंद अतीत और अधिक प्रतिस्पर्धी, सुरक्षित ऊर्जा भविष्य के बीच एक सेतु का काम करे। ■

इतिहास के निर्णायक मोड़ पर खड़ा विश्व

धर्मेंद्र धवल
प्रान्त सह शारीरिक प्रमुख, मेरठ

इतिहास गवाह है कि जब-जब मध्य पूर्व की धरती पर अशांति के बादल मंडराए हैं, उसका कंपन पूरी दुनिया ने महसूस किया है। वर्तमान में इज़राइल, अमेरिका और ईरान के त्रिकोण के बीच उपजा तनाव मात्र एक सीमा विवाद या धार्मिक संघर्ष नहीं है, बल्कि यह 21वीं सदी के नए 'महान खेल' का हिस्सा है। एक ओर इजराइल की अस्तित्व की लड़ाई है, दूसरी ओर अमेरिका का गिरता हुआ वैश्विक दबदबा और तीसरी ओर ईरान की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाएं। इस महाशक्ति-द्वंद्व के बीच भारत की भूमिका एक श्मूक दर्शकश की नहीं, बल्कि एक 'सक्षम शक्ति' और 'विश्व-मित्र' की है। आज भारत जिस तरह से इन विपरीत परिस्थितियों को अपने पक्ष में मोड़ रहा है, उससे उसकी अंतरराष्ट्रीय छवि में अभूतपूर्व निखार आया है ।

इजराइल और ईरान के बीच बढ़ता सीधा टकराव वैश्विक कूटनीति के पुराने नियमों को बदल रहा है। अमेरिका, जो पारंपरिक रूप से इस क्षेत्र का 'थानेदार' रहा है, अब अपनी आंतरिक राजनीति और यूक्रेन जैसे अन्य मोर्चों के कारण रक्षात्मक मुद्रा में है। इस शक्ति के शून्य को भरने के लिए चीन और रूस जैसे देश घात लगाए बैठे हैं।

ऐसी स्थिति में भारत की 'रणनीतिक स्वायत्तता' दुनिया के लिए एक मिसाल बन गई है। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसकी विदेश नीति किसी गुट विशेष की बंधक नहीं है। जहाँ हम इजराइल के साथ रक्षा और तकनीक में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं, वहीं ईरान के साथ हमारे ऊर्जा हित और चाबहार बंदरगाह के जरिए मध्य एशिया तक पहुँचने के रास्ते जुड़े हैं। भारत की यह 'संतुलनकारी नीति' आज की तारीख में सबसे कठिन कूटनीतिक कार्य है, जिसे भारत कुशलता से अंजाम दे रहा है।

आर्थिक चुनौती और अवसर युद्ध का सबसे भयावह रूप आर्थिक अस्थिरता के रूप में सामने आता है। 'रेड सी' (लाल सागर) में हो रहे हमलों ने वैश्विक व्यापार की कमर तोड़ दी है। माल ढुलाई का खर्च बढ़ने से महंगाई का खतरा पूरी दुनिया पर मंडरा रहा है। भारत के लिए यह दोहरा संकट हैकृएक तरफ तेल की कीमतों का डर और दूसरी तरफ हमारे निर्यात पर पड़ने

वाला बुरा असर।

परंतु, एक 'सक्षम शक्ति' वही है जो आपदा को अवसर में बदले। भारत ने अपनी ऊर्जा निर्भरता को केवल खाड़ी देशों तक सीमित न रखकर रूस और अमेरिका जैसे अन्य स्रोतों तक फैलाया है। इसके अतिरिक्त, 'इजराइल-हमास' संघर्ष के बीच भी भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे की चर्चा कम नहीं हुई है। यह गलियारा भविष्य में भारत को वैश्विक व्यापार का केंद्र बनाने की क्षमता रखता है। भारत आज आर्थिक रूप से इतना सशक्त है कि वह बाहरी झटकों को सहने के साथ-साथ अपनी विकास दर को भी बरकरार रखे हुए है।

आज भारत 'विश्व गुरु' से 'विश्व मित्र' तक का सफर तय करेगा : इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस संकटकाल में भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि एक 'शांतिदूत' और 'जिम्मेदार राष्ट्र' के रूप में उभरी है। यूक्रेन संकट से लेकर मध्य पूर्व के मौजूदा युद्ध तक, प्रधानमंत्री मोदी का यह वाक्य कि 'यह युद्ध का युग नहीं ह', वैश्विक कूटनीति का मूलमंत्र बन गया है।

आज जब दुनिया वैचारिक रूप से दो फाड़ हो चुकी है, तब भारत 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) का नेतृत्व कर रहा है। जी-20 की अध्यक्षता के बाद से भारत ने यह संदेश दिया है कि वैश्विक समस्याओं का समाधान युद्ध की विभीषिका में नहीं, बल्कि कूटनीति और संवाद की मेज पर है। यही कारण है कि आज संकट के समय चाहे वह इजराइल हो, ईरान हो या अरब देश, सभी भारत की ओर एक उम्मीद भरी नजर से देखते हैं। भारत की 'सॉफ्ट पावर' आज उसकी श्हार्ड पावरश के साथ मिलकर एक संपूर्ण महाशक्ति का निर्माण कर रही है।

मध्य पूर्व का यह युद्ध भारत को एक

इजराइल और ईरान के बीच बढ़ता सीधा टकराव वैश्विक कूटनीति के पुराने नियमों को बदल रहा है। अमेरिका, जो पारंपरिक रूप से इस क्षेत्र का 'थानेदार' रहा है, अब अपनी आंतरिक राजनीति और यूक्रेन जैसे अन्य मोर्चों के कारण रक्षात्मक मुद्रा में है। इस शक्ति के शून्य को भरने के लिए चीन और रूस जैसे देश घात लगाए बैठे हैं।

कड़ा सबक भी दे रहा है कि भविष्य की लड़ाइयां केवल थल और नभ पर नहीं, बल्कि अंतरिक्ष, साइबर और ड्रोन तकनीक से लड़ी जाएंगी। भारत को एक 'सक्षम शक्ति' के रूप में तैयार रहने के लिए अपनी सैन्य शक्ति का आधुनिकीकरण तीव्र गति से करना होगा। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत स्वदेशी रक्षा उत्पादन न केवल हमारी सेना को मजबूत करेगा, बल्कि वैश्विक रक्षा बाजार में भी हमारी साख बढ़ाएगा।

हमें यह समझना होगा कि वैश्विक राजनीति में 'शांति' केवल वही देश स्थापित कर सकता है जो 'शक्तिशाली' हो। भारत आज अपनी सैन्य शक्ति, आर्थिक गति और कूटनीतिक दूरदर्शिता के संगम पर खड़ा है।

एक नए भारत का उदय भी हो रहा हो इजराइल-अमेरिका-ईरान के मध्य छिड़ा यह संघर्ष विश्व व्यवस्था के पुनर्गठन का संकेत है। इस बदलते दौर में भारत का एक 'स्थिरता के द्वीपश के रूप में उभरना सुखद भी है और गौरवशाली भी। भारत की बढ़ती अंतरराष्ट्रीय छवि और उसकी कूटनीतिक सफलताएं इस बात का प्रमाण हैं कि हम केवल एक क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि एक उभरती हुई वैश्विक महाशक्ति हैं।

यह समय आत्ममुग्ध होने का नहीं बल्कि और अधिक 'सक्षम' और 'सजग' होने का है। हमें अपनी आंतरिक मजबूती और बाहरी कूटनीति को इस स्तर पर ले जाना है कि आने वाले समय में विश्व का कोई भी बड़ा निर्णय भारत की सहमति के बिना न लिया जा सके। भारत की यह यात्रा 'विश्व कल्याण' की भावना से ओत-प्रोत है, और यही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। ■

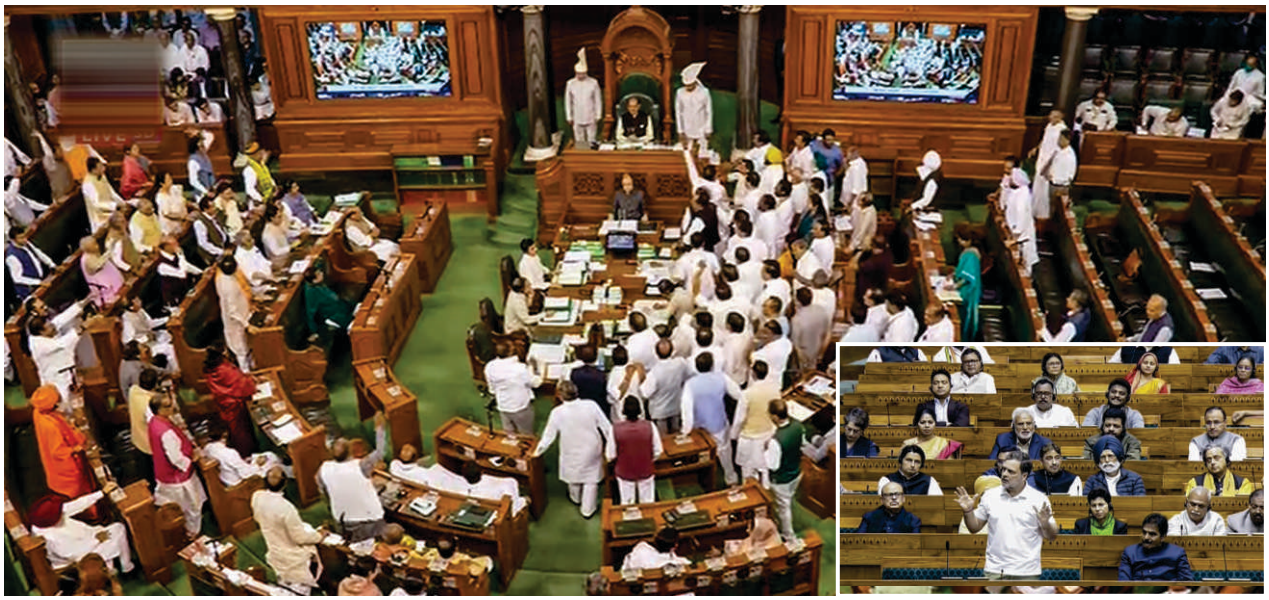

भारतीय संसद में विपक्ष का व्यवहार

वर्ष 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य साकार करने के लिए अगले 25 वर्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह वह कालखंड है जब भारत को अपनी समस्त शक्ति, संकल्प और संसाधन एकजुट करने होंगे। इस महायज्ञ में संसद वह पवित्र वेदी है जहां राष्ट्र की नीतियां गढ़ी जाती हैं, दिशाएं तय होती हैं और करोड़ों भारतीयों के भविष्य की नींव रखी जाती है। इसलिए सदन का एक-एक मिनट राष्ट्र की अमूल्य पूंजी है। जब सदन बाधित होता है, तो केवल कार्यवाही नहीं रुकती, बल्कि विकसित भारत की यात्रा भी उतने क्षण के लिए रुक जाती है। यदि इस कटु सत्य को विपक्ष एक राष्ट्रीय दायित्व के रूप में आत्मसात कर ले, तो यह देश और विपक्ष दोनों के लिए कल्याणकारी होगा।

राम जी तिवारी
वरिष्ठ पत्रकार

लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें सत्ता और विपक्ष दोनों मिलकर राष्ट्र की नाव को आगे बढ़ाते हैं। यदि सत्ता पक्ष पतवार है, तो विपक्ष उसका दिशा सूचक है जो नाव को भटकने से रोकता है। लेकिन जब दिशा सूचक स्वयं ही भटक जाए और विपक्ष का ध्येय राष्ट्रहित के बजाय हंगामा और अवरोध बन जाए, तो लोकतंत्र की नाव न केवल डगमगाती है, बल्कि जिस जनता ने उस पर विश्वास जताया है उसके लिए भी विश्वासघाती है। फिर भी विपक्ष का ये गैर जिम्मेदाराना रवैया पिछले एक दशक से जारी है। इसी क्रम में बजट सत्र 2026 में भी उसका वही चिरपरिचित हंगामें वाला अंदाज फिर एक बार इस कड़वी सच्चाई को उजागर किया है।

हंगामा की रणनीति : 28 जनवरी 2026 को शुरू होकर 2 अप्रैल तक चले इस बजट सत्र में विपक्षी दलों ने लगातार सदन की कार्यवाही बाधित की। पहले चरण में राहुल गांधी ने पूर्व सेना प्रमुख की पुस्तक (जो अभी प्रकाशित भी नहीं हुई) का संदर्भ देकर सदन को घंटों ठप किया। दूसरे चरण में तो विपक्ष ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाकर संसदीय इतिहास में एक चिंताजनक अध्याय जोड़ दिया। विपक्ष का तर्क है, जब सरकार हमारी बात नहीं सुनती, तो हंगामा ही एकमात्र विकल्प है। यह तर्क सुनने में भले ही भावनात्मक लगे, परंतु तथ्यों की कसौटी पर

यह खरा नहीं उतरता। क्या हंगामा करने से सरकार की जवाबदेही बढ़ी? क्या संसद ठप करने से जनता के प्रश्नों के उत्तर मिले? क्या हंगामा से देश का भला हुआ। उत्तर स्पष्ट है 'नहीं'। हंगामा करके विपक्ष केवल सरकार को नहीं, बल्कि उसी जनता को ठेस पहुंचाई है जिसने उनको चुनकर बड़े ही विश्वास से सदन में अपनी बात रखने के लिए भेजा है।

सत्र के घटते दिन : यह समस्या केवल बजट सत्र 2026 तक सीमित नहीं है। बल्कि पिछले कुछ वर्षों से विपक्ष के तौर तरीके ने पूरे संसदीय व्यवस्था के स्वास्थ्य को चिंताजनक स्तर तक प्रभावित किया है। एक वर्ष में बजट, मानसून और शीतकालीन तीन सत्र होते हैं, परंतु सप्ताहांत और अवकाश हटाने के बाद कुल कार्य दिवस लगभग 70 से 80 दिन रह जाते हैं। लेकिन हंगामे के चलते आज यह घटकर औसतन 60 से 70 दिन तक सिमट जाता है। यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि यह हमारे लोकतंत्र की घटती जीवन शक्ति का स्पष्ट संदेश है। जब संसद कम चले और उसमें भी हंगामा हो, तो राष्ट्र का बहुमूल्य समय और संसाधन दोनों नष्ट होते हैं।

राष्ट्रहित को विमर्श का केंद्र बनाना होगा : यदि भारत को तय समय में विकसित बनना है, तो बाह्य और आंतरिक समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी किसी एक दल की नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में उठापटक, ऊर्जा निर्भरता, सीमा सुरक्षा, कौशल विकास, आत्मनिर्भरता, कृषि उन्नयन ये सभी मुद्दे ऐसे हैं जिन पर सत्ता और विपक्ष दोनों को मिलकर राष्ट्रहित में सोचना चाहिए। विपक्ष को समझना होगा कि स्वदेशी, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय एकता केवल सत्ता पक्ष के नारे नहीं हैं बल्कि ये भारत की आत्मा हैं। जब विपक्ष स्वदेशी उद्योगों की रक्षा और देश की सांस्कृतिक- सामरिक स्वायत्तता के प्रश्न सदन में उठाएगा, तो वह सरकार को सोचने के लिए मजबूर करने के साथ ही जनता का सच्चा पैरोकार भी बनेगा। यदि विपक्ष स्वदेशी आर्थिक नीति, ग्रामीण उद्योगों का पुनरुद्धार और 'मेक इन इंडिया' की वास्तविक समीक्षा को अपनी संसदीय रणनीति का केंद्र बनाए, तो वह एक ऐसी विरासत छोड़ेगा जो राष्ट्र को दिशा देगी। लेकिन जब विपक्ष आंतरिक रूप से बंटा हो, क्षेत्रीय और दलगत स्वार्थों से संचालित हो, तो वह राष्ट्रीय एकता का संदेशवाहक कैसे बनेगा? विपक्ष को यह समझना होगा कि राष्ट्रीय एकता के विषयों पर चाहे वह सीमा सुरक्षा हो, आतंकवाद हो, या बाहरी आर्थिक दबाव सत्ता पक्ष के साथ मिलकर खड़े होना कमजोरी नहीं, परिपक्वता का प्रतीक है जो विपक्ष राष्ट्रीय संकट में भी केवल राजनीति करता है, वह जनता की नजर में विश्वसनीयता खो देता है।

जब विपक्ष आंतरिक रूप से बंटा हो, क्षेत्रीय और दलगत स्वार्थों से संचालित हो, तो वह राष्ट्रीय एकता का संदेशवाहक कैसे बनेगा? विपक्ष को यह समझना होगा कि राष्ट्रीय एकता के विषयों पर चाहे वह सीमा सुरक्षा हो, आतंकवाद हो, या बाहरी आर्थिक दबाव सत्ता पक्ष के साथ मिलकर खड़े होना कमजोरी नहीं, परिपक्वता का प्रतीक है। जो विपक्ष राष्ट्रीय संकट में भी केवल राजनीति करता है, वह जनता की नजर में विश्वसनीयता खो देता है।

तथ्य, तर्क और दृष्टि हो असली ताकत : देश दुनिया में सफल लोकतंत्रों का इतिहास बताता है कि महान विपक्षी नेताओं ने सत्ता को तथ्यों से, तर्कों से और वैकल्पिक नीतियों की स्पष्ट दृष्टि से घेरा न कि शोर शराबे से। भारत में भी डॉ. राम मनोहर लोहिया, अटल बिहारी वाजपेयी और चंद्रशेखर जैसे नेताओं ने विपक्ष की भूमिका को उसकी ऊंचाई दी। उनका विरोध व्यक्तिगत नहीं, वैचारिक था। उनकी आलोचना विनाशकारी नहीं, रचनात्मक थी। आज के विपक्ष को उसी परंपरा को पुनर्जीवित करना होगा। जब कोई विपक्षी सांसद बजट के आंकड़ों की गहन पड़ताल कर सरकार को घेरे, जब कोई सांसद किसी विधेयक की कमियां संसदीय शालीनता के साथ उजागर करे, जब विपक्ष का कोई नेता एक वैकल्पिक आर्थिक दृष्टिपत्र लेकर सदन में उपस्थित होगा तभी विपक्ष जनता का सच्चा विश्वासपात्र बनेगा। ऐसे में विपक्ष को स्वयं ही एक आचार संहिता अपनानी होगी और यह तय करना होगा कि किन मुद्दों पर हंगामा उचित है और किन पर चर्चा।

एक मजबूत विपक्ष, एक मजबूत भारत : भारतीय लोकतंत्र को आज एक ऐसे विपक्ष की आवश्यकता है जो हंगामे को नहीं, हौसले को अपना हथियार बनाए। जो सदन में तथ्यों से गरजे, स्वदेशी और राष्ट्रीय एकता को अपनी चर्चा का केंद्र बनाए और हर नीति को राष्ट्रहित की कसौटी पर परखे। जब विपक्ष यह समझ लेगा कि उसकी असली शक्ति जनता के विश्वास में है, हंगामे में नहीं तब वह न केवल एक अच्छे विपक्ष की भूमिका निभाएगा, बल्कि एक बेहतर भारत बनाने का भागीदार भी बनेगा। क्योंकि अंततः, राष्ट्र न किसी एक दल का है, न किसी एक विचारधारा का राष्ट्र उन 140 करोड़ भारतीयों का है जो एक समृद्ध, सुरक्षित और स्वाभिमानी भारत का स्वप्न देखते हैं। और उस स्वप्न को साकार करने की जिम्मेदारी सत्ता और विपक्ष दोनों की बराबर है। तभी 2047 तक विकसित भारत का संकल्प सिद्धि में बदलेगा। ■

भविष्य का ऊर्जा परिदृश्य किसका
परमाणु ऊर्जा या अक्षय ऊर्जा?

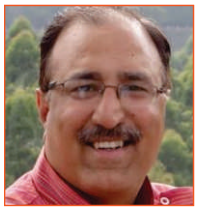

कुमार सिद्धार्थ
वरिष्ठ पत्रकार

विश्व परमाणु उद्योग स्थिति रिपोर्ट के ताजा आँकड़े बताते हैं कि दुनिया की ऊर्जा दिशा निर्णायक रूप से बदल चुकी है। बीते पच्चीस वर्षों से परमाणु ऊर्जा उद्योग लगभग ठहराव की स्थिति में है, वहीं नवीकरणीय ऊर्जा उसी अवधि में तेजी से आगे बढ़ रही है। रिर्पोट के अनुसार वर्ष 2025 में पूरी दुनिया में जहां केवल 4.4 गीगावॉट नई परमाणु क्षमता का विस्तार हुआ है, वहीं सौर और पवन ऊर्जा में लगभग 793 गीगावॉट की वृद्धि हुई। ये आँकड़े बताते है कि वैश्विक ऊर्जा नीति और निवेश की दिशा अब किस ओर मुड़ चुकी है। परमाणु ऊर्जा, जिसे कभी आधुनिकता और प्रगति का प्रतीक माना गया था, अब धीरे-धीरे हाशिये पर जा रही है। इसके उलट अक्षय ऊर्जा न केवल ऊर्जा उत्पादन का प्रमुख स्रोत बनती जा रही है, बल्कि वह एक नई सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक दिशा का प्रतिनिधित्व कर रही है।

रिर्पोट यह भी इंगित करती है कि परमाणु रिएक्टर बनाने वाले देशों की संख्या तेजी से घट रही है। पिछले दो वर्षों में यह संख्या 16 से घटकर 11 रह गई है। कई देशों ने या तो अपने अंतिम निर्माण परियोजना पूरी कर ली हैं या फिर नई परियोजनाओं को स्थगित कर दिया है। फ्रांस, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका जैसे देशों ने अपने आखिरी निर्माण प्रोजेक्ट पूरे कर लिए हैं। वहीं अर्जेंटीना, ब्राजील और जापान ने निर्माण कार्यों को या तो रोक दिया है या पूरी तरह समाप्त कर दिया है। इन सबके बीच केवल पाकिस्तान ऐसा देश है, जो हाल के वर्षों में इस सूची में नया नाम बनकर उभरा है।

आज दुनिया में 31 देश ऐसे हैं, जहां व्यावसायिक रूप से परमाणु बिजलीघर संचालित हो रहे हैं। लेकिन इनमें से भी केवल आठ देश ही नए रिएक्टर बना रहे हैं। इसके अलावा तीन देश बांग्लादेश, मिस्र और तुर्किये पहली बार अपने यहां परमाणु रिएक्टर बना रहे हैं। गौरतलब है कि इन तीनों देशों में यह काम रूसी परमाणु उद्योग की सहायता से हो रहा है।

शोधकर्ताओं का विश्लेषण बताता है कि वर्ष 2025 परमाणु उद्योग के लिए एक और निराशाजनक वर्ष रहा। जिस समय दुनिया जलवायु संकट से जूझ रही है और स्वच्छ ऊर्जा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है, उस समय परमाणु ऊर्जा अपेक्षित भूमिका निभाने में असफल रही है। वर्ष में दुनिया भर में केवल चार नए रिएक्टर चालू हुए, जबकि सात रिएक्टर स्थायी रूप से बंद कर दिए गए।

आज वैश्विक स्तर पर केवल 404 परमाणु रिएक्टर ही संचालित हैं, जो 2002 के 438 से काफी कम हैं। परमाणु ऊर्जा की हिस्सेदारी वैश्विक बिजली उत्पादन में घटकर 9 फीसद रह गई है, जबकि 1996 में यह 17.5 फीसद थी। यह गिरावट बताती है कि परमाणु ऊर्जा न केवल विस्तार में पीछे छूट रही है, बल्कि अपने ऐतिहासिक प्रभुत्व को भी खोती जा रही है। आमतौर पर परमाणु संयंत्र को बनने में दस से पंद्रह साल लगते हैं, और लागत अक्सर शुरुआती अनुमान से दोगुनी-तिगुनी हो जाती है।

परमाणु ऊर्जा केवल ऊर्जा उत्पादन का प्रश्न नहीं है, वह हमेशा से वैश्विक राजनीति, सैन्य शक्ति और सुरक्षा चिंताओं से भी जुड़ी रही है। यही कारण है कि जब भी किसी क्षेत्र में युद्ध या तनाव की स्थिति बनती है, तो परमाणु संयंत्र सबसे अधिक जोखिम वाले ठिकानों में गिने जाते हैं। वे स्थिर लक्ष्य होते हैं, जिन पर हमला केवल एक देश ही नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है।

चेर्नोबिल और फुकुशिमा जैसी आपदाएं बताती हैं कि एक दुर्घटना पूरे देश और कई पीढ़ियों को प्रभावित कर सकती है। लेकिन आज यह खतरा केवल तकनीकी या प्राकृतिक आपदा तक सीमित नहीं रह गया है। इतिहास

गवाह है कि परमाणु संयंत्रों पर सैन्य हमले कोई नई बात नहीं हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध ने इस खतरे को अभूतपूर्व रूप से उजागर कर दिया है। इजराइल द्वारा इराक और सीरिया के परमाणु ठिकानों पर हमले, ईरान-इराक युद्ध में परमाणु सुविधाओं को निशाना बनाना, और अमेरिका द्वारा इराक के शोध रिएक्टर को नष्ट करना वहीं यूक्रेन का जापोरिज्झिया परमाणु संयंत्र, जो यूरोप का सबसे बड़ा परमाणु संयंत्र है, आज भीषण सैन्य तनाव के बीच खड़ा है। ये सभी उदाहरण बताते हैं कि शांतिपूर्ण परमाणु हमेशा सैन्य राजनीति की छाया में रहा है।

अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी ने इस स्थिति को अत्यंत नाजुक और अस्थिर बताया है। वर्ष 2025 में चेर्नोबिल के क्षतिग्रस्त चौथे रिएक्टर के ऊपर बने सुरक्षा गुंबद पर एक ड्रोन हमले ने गंभीर नुकसान पहुंचाया था। यह घटना बताती है कि दशकों पुरानी परमाणु आपदाएं भी आज के युद्धों में दोबारा खतरे में पड़ सकती हैं। इसके अलावा यूक्रेन में कम से कम 10 बार ऐसे सब-स्टेशनों पर हमले हुए, जो परमाणु संयंत्रों को बिजली आपूर्ति करते हैं। उर्जा एंजेसी के अनुसार ये सब-स्टेशन परमाणु सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं क्योंकि इन्हीं के माध्यम से रिएक्टरों को ठंडा रखने और अन्य सुरक्षा प्रणालियां चलाने के लिए बिजली मिलती है।

चीन एकमात्र बड़ा बाजार है, जहां अभी भी परमाणु निर्माण के कुछ प्रोजेक्ट देखे जा सकते है यही कारण है कि वर्ष 2025 में बनी अधिकांश नई निर्माण-शुरुआतें चीन में ही केंद्रित रहीं। 2025 में कुल 11 नए परमाणु रिएक्टरों के निर्माण कार्य की शुरुआत हुई, जिनसे लगभग 12 गीगावॉट क्षमता जुड़ने की संभावना है।

वहीं दूसरी ओर इसी कड़ी में ताइवान ने वर्ष 2025 में अपना अंतिम परमाणु रिएक्टर बंद कर दिया और वह परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को पूरी तरह छोड़ने वाला दुनिया का पांचवां देश बन गया। इससे पहले इटली (1990), कजाखिस्तान (1999), लिथुआनिया (2009) और जर्मनी (2023) ऐसा कर चुके हैं।

इसके बावजूद वर्ल्ड न्यूक्लियर एसोसिएशन दावा करता है कि वर्ष 2050 तक वैश्विक परमाणु क्षमता 1,446 गीगावॉट तक पहुंच सकती है। लेकिन एसोसिएशन इन दावों को अवास्तविक मानती है।

अब दूसरी ओर देखें तो अक्षय ऊर्जा अलग तस्वीर पेश करती है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार वर्ष 2025 से 2030 के बीच दुनिया में 4,600 गीगावॉट नई नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित होगी, जो पिछले पांच वर्षों की तुलना में दोगुनी है। एजेंसी का अनुमान है कि वर्ष 2026 के मध्य तक अक्षय ऊर्जा कोयले को पछाड़कर दुनिया का सबसे बड़ा बिजली स्रोत बन जाएगी। वर्ष 2024 में जहां वैश्विक बिजली उत्पादन में अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी 32 फीसद थी, वहीं 2030 तक इसके 43 फीसद तक पहुंचने की संभावना है। 2025-2030 के दौरान वैश्विक बिजली मांग में होने वाली वृद्धि का 90 फीसद से अधिक हिस्सा नवीकरणीय ऊर्जा पूरी करेगी।

यह सिर्फ ऊर्जा का सवाल नहीं है, यह सत्ता और लोकतंत्र का सवाल भी है। परमाणु ऊर्जा एक अत्यधिक केंद्रीकृत मॉडल है। इसे केवल राज्य या विशाल कॉरपोरेट ढाँचे ही नियंत्रित कर सकते हैं। वहीं अक्षय ऊर्जा विकेन्द्रित मॉडल है। एक गांव, एक कस्बा, एक घर भी ऊर्जा उत्पादक बन सकता है। इसीलिए अक्षय ऊर्जा केवल तकनीकी समाधान नहीं, बल्कि ऊर्जा लोकतंत्र की बुनियाद है। यह स्थानीय रोज़गार पैदा करती है, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करती है और नागरिकों को उपभोक्ता से उत्पादक बनने का अवसर देती है।

इस वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति निर्णायक है। भारत एक ओर सौर ऊर्जा में दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल हो चुका है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के जरिए भारत ने वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाई है। सौर और पवन क्षमता में तेजी से वृद्धि हो रही है। ग्रीन हाइड्रोजन, बैटरी स्टोरेज और विकेन्द्रित ऊर्जा प्रणालियां भारत के लिए एक नए ऊर्जा भविष्य के द्वार खोल रही हैं।

दूसरी ओर भारत आज भी परमाणु ऊर्जा को रणनीतिक आवश्यकता के रूप में देखता है। नए परमाणु संयंत्रों की योजनाएं बनी हुई हैं, जबकि वे अत्यधिक महंगे, समय-साध्य और जोखिमपूर्ण हैं। भारत जैसे देश में, जहां ऊर्जा का सवाल सामाजिक न्याय से जुड़ा है, यह एक गंभीर नीति-विरोधाभास है।

क्या भारत की ऊर्जा नीति कुछ गिने-चुने बड़े परियोजनाओं पर आधारित होगी, या वह गांव-गांव और घर-घर ऊर्जा पहुंचाने का साधन बनेगी? क्या ऊर्जा सत्ता के केंद्रीकरण का औजार होगी, या लोकतंत्र के विस्तार का माध्यम? अक्षय ऊर्जा इन सवालों का व्यावहारिक उत्तर देती है। यह कम लागत में अधिक बिजली देती है। स्थानीय समुदायों को सशक्त करती है, वही पर्यावरणीय न्याय को मजबूत भी करती है। साथ ही जलवायु संकट के समाधान में अधिक कारगर है।

परमाणु ऊर्जा इसके विपरित है। यह महंगी और सुरक्षा जोखिम पैदा करती है। यह सैन्य और राजनीतिक तनाव से जुड़ी रहती है। परमाणु ऊर्जा का संकट केवल तकनीकी नहीं, वैचारिक है। यह उस सोच की विफलता है जो मानती थी कि मानव सभ्यता को बचाने के लिए विशाल, केंद्रीकृत और जोखिमपूर्ण तकनीकों की जरूरत है।

भारत के सामने आज ऐतिहासिक अवसर है। वह या तो परमाणु ऊर्जा के बीसवीं सदी के मॉडल से चिपका रहे, या इक्कीसवीं सदी के अक्षय ऊर्जा मॉडल का नेतृत्व करे। परमाणु ऊर्जा बीते युग की शक्ति-राजनीति का प्रतीक है। अक्षय ऊर्जा आने वाले युग की नैतिकता और लोकतंत्र का। दुनिया के आँकड़े, युद्ध के अनुभव और तकनीकी रुझान तीनों एक ही दिशा की ओर इशारा कर रहे हैं भविष्य परमाणु का नहीं, अक्षय ऊर्जा का है। अगर दुनिया भविष्य को सुरक्षित और टिकाऊ बनाना चाहती है, तो उसे परमाणु ऊर्जा के भ्रम से बाहर निकलकर नवीकरणीय ऊर्जा की वास्तविकता को अपनाना होगा। ■

बदलती अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था और वैश्विक उथलपुथल

डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह
सहायक प्रोफेसर, देशबंधु कॉलेज, दिल्ली विवि.

विश्व व्यवस्था से तात्पर्य अंतरराष्ट्रीय संस्थानों, सरकारों और नियमों के आपसी तालमेल से है। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें देश संप्रभुता का सम्मान करते हुए सहयोग करते हैं, नियमों का पालन करते हैं और विवादों का समाधान शांतिपूर्ण तरीके से करते हैं। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन और अन्य संस्थाएं इसी व्यवस्था का आधार हैं। लेकिन आज यह व्यवस्था चुनौतियों का सामना कर रही है-शक्ति संतुलन बदल रहा है, बड़े देश अपने हितों को प्राथमिकता दे रहे हैं, और बहुपक्षीयता कमजोर पड़ रही है। यह संक्रमण काल अस्थिरता, संघर्षों और नई गठबंधनों को जन्म दे सकता है।

आज के दौर की वैश्विक राजनीतिक उथल-पुथल ने न सिर्फ पूर्व में स्थापित अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक और आर्थिक मिनिकों को चुनौती दी है बल्कि वैश्विक व्यवस्था के पूरे स्वरूप में बदलाव की प्रक्रिया को जन्म दिया है। 20वीं शताब्दी के मध्य में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी अधिपत के बीच स्थापित हुई अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था जिसे बाद में भूमंडलीकरण के प्रभाव में वैश्विक स्वरूप प्राप्त किया था लगातार नए संकटों से जूझ रही है। 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बीच शुरू हुई यह चुनौतियां, चीन के बढ़ते प्रभुत्व और उदय, तमकी नेतृत्व में अमेरिका की आक्रामक विदेश नीति, कोरोना संकट, रूस यूक्रेन लड़ाई और हाल में जारी ईरान इजरायल अमेरिका की संघर्ष के बीच लगातार समन्वय बनाने का सफल प्रयास कर रही है। इसके साथ ही मध्य शक्तियों जिसमें कि भारत एक प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक देश है ने भी वैश्विक स्तर पर अपनी नई पहचान और भूमिका की तलाश में कई अंतरराष्ट्रीय और वैश्विक सुधारो की मांगों को दिशा दी है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी संस्थाएं आज के दौर की वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करतीं, जिससे उनकी प्रभावशीलता कम हो रही है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की विश्व व्यवस्था, जिसे (Pax Americana) के नाम से जाना जाता है, अमेरिका के नेतृत्व में स्थापित हुई थी। इस व्यवस्था ने संयुक्त राष्ट्र, नाटो, विश्व बैंक, आईएमएफ जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के माध्यम से नियम-आधारित व्यवस्था को मजबूत किया, जिसमें अमेरिका ने वैश्विक शांति, व्यापार और सुरक्षा की गारंटी दी। शीत युद्ध के अंत के बाद यह व्यवस्था और मजबूत हुई, लेकिन अब इसका अंत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। अमेरिका की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति, यूरोपीय सहयोगियों से दूरी, और वैश्विक संस्थाओं पर कम भरोसा इस व्यवस्था के क्षय का संकेत है।

21वीं सदी के तीसरे दशक में वैश्विक राजनीति एक ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ी है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिका के नेतृत्व में बनी 'एक-ध्रुवीय' (Unipolar) व्यवस्था अब अतीत की बात होती जा रही है। आज की दुनिया एक ऐसी 'बहु-ध्रुवीय व्यवस्था' (Multipolar Order) की ओर बढ़ रही है, जहां शक्ति के केंद्र वाशिंगटन से हटकर बीजिंग, मॉस्को और नई दिल्ली जैसे शहरों की ओर स्थानांतरित हो रहे हैं।

चीन का उदय (Rise of China as a Revisionist Power) इस दारू की एक महत्वपूर्ण घटना है जिसने वैश्विक राजनीति में हो रहे हैं बदलावों को बहुत प्रभावित किया है।

पिछले तीन दशकों में चीन का आर्थिक और सैन्य उभार आधुनिक इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। चीन अब केवल एक 'मैनुफैक्चरिंग हब' नहीं रहा,

बल्कि वह एक (Revisionist Power) के रूप में उभरा है। इसका अर्थ है वह राष्ट्र जो वर्तमान अंतरराष्ट्रीय नियमों और संस्थानों (जैसे UN, WTO) को अपनी सुविधा और विचारधारा के अनुसार बदलना चाहता है। अपनी 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (BRI) के माध्यम से चीन ने एशिया से लेकर अफ्रीका और यूरोप तक अपना प्रभाव फैलाया है। दक्षिण चीन सागर में उसकी आक्रामकता और ताइवान पर उसका दावा यह स्पष्ट करता है कि वह पश्चिमी प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए तैयार है। चीन की 'वुल्फ वॉरियर' कूटनीति और तकनीकी क्षेत्र (AI, 6G) में उसकी बढ़त ने उसे अमेरिका के सीधे प्रतिद्वंद्वी के रूप में खड़ा कर दिया है।

सोवियत संघ के पतन के बाद, एक समय माना जा रहा था कि रूस वैश्विक मंच पर अपनी प्रासंगिकता खो चुका है। हालांकि, व्लादिमीर पुतिन के नेतृत्व में रूस ने खुद को एक बार फिर से 'महान शक्ति' (Great Power) के रूप में स्थापित किया है। पुतिन की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य सोवियत काल के गौरव को वापस लाना और नाटो (NATO) के विस्तार को रोकना है। यूक्रेन के साथ जारी संघर्ष ने यह दिखा दिया है कि रूस अपनी सुरक्षा चिंताओं के लिए सैन्य शक्ति के उपयोग से पीछे नहीं हटेगा। ऊर्जा संसाधनों पर अपनी पकड़ के कारण रूस आज भी वैश्विक अर्थव्यवस्था और राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

इस वैश्विक उथल-पुथल का एक बड़ा कारण एशियाई राजनीति का आस्था स्वरूप भी है। जिसमें सहयोग और टकराव दोनों की संभावना बराबर बनी रहती है। आमतौर पर 21वीं सदी को एशिया की सदी कहा जाता है। लेकिन आज के दौर की यह सच्चाई है कि एशिया महाद्वीप एकजुट नहीं है। जिस प्रकार से एशिया में अलग-अलग देशों की ताकत बढ़ी है, इसमें कोई शक नहीं है कि उसने वैश्विक सुरक्षा, नियम-कानून पर आधारित बहुपक्षवाद और वैश्विक अर्थव्यवस्था के सामने तमाम चुनौतियां पेश की हैं।

इस वैश्विक उथल-पुथल और टकराव के बीच भारत अपनी नई भूमिका को परिभाषित कर रहा है। भारत विशेष रूप से 'ग्लोबल साउथ' की आवाज बनकर उभरा है, जो पश्चिम और पूर्व के बीच एक सेतु (Bridge) का कार्य कर रहा है। इस लिहाज से देखा जाए तो भारत के उभार को व्यापक स्तर पर बेहद अच्छा माना जाता है, यानी भारत को एक ऐसा देश माना जाता है, जो दुनिया में नैतिकता और अच्छाई के लिए लड़ाई करता है और बुरी चीजों का विरोध करता है। एक ऐसी दुनिया में, जिसमें विचारों को लेकर जबरदस्त खींचतान मची हुई है

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की विश्व व्यवस्था, जिसे (Pax Americana) के नाम से जाना जाता है, अमेरिका के नेतृत्व में स्थापित हुई थी। इस व्यवस्था ने संयुक्त राष्ट्र, नाटो, विश्व बैंक, आईएमएफ जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के माध्यम से नियम-आधारित व्यवस्था को मजबूत किया, जिसमें अमेरिका ने वैश्विक शांति, व्यापार और सुरक्षा की गारंटी दी। शीत युद्ध के अंत के बाद यह व्यवस्था और मजबूत हुई, लेकिन अब इसका अंत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है।

और जिसका बंटवारा सा हो चुका है, इन परिस्थितियों में भारत एक पुल के रूप में सामने आया है, यानी एक ऐसे माध्यम के तौर पर उभरा है, जिसकी आज के दौर में सबसे ज्यादा जरूरत है। इसके अलावा, विश्व में जब भी मूल्यों को लेकर सवाल उठते हैं, तो भारत सामान्य तौर पर सही पक्ष के साथ खड़ा नजर आता है।

वैश्विक स्तर पर भारत की भूमिका आज इतनी अहम हो गई है कि इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में स्थिरता से लेकर वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र की मजबूती तक, सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) को हासिल करने से लेकर जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने तक और आज के दौर के ऐसे हर अहम मुद्दे का समाधान तलाशने की क़ामयाबी भारत द्वारा की जाने वाली कार्रवाई पर ही निर्भर करती है।

जी20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने इस मंच का उपयोग अपनी वैश्विक पहुंच को मजबूत करने के लिए किया। जी20 के मंच पर भारत ने न केवल अपनी बातों को मजबूती के साथ रखा, बल्कि अफ्रीका से लेकर लैटिन अमेरिकी देशों समेत तमाम और राष्ट्रों को लेकर अपने विचारों एवं चिताओं को भी बेबाक़ तरीक़े से सभी के सामने रखा। चाहे जलवायु परिवर्तन का मुद्दा हो, या भू-राजनीतिक संघर्ष का मसला, या फिर बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार का मुद्दा, ऐसे हर वैश्विक मसले पर भारत ने खुलकर अपने पक्ष को दुनिया के सामने रखा।

आज जब वैश्विक स्तर के मामलों में पड़ने से पश्चिमी देश अपने कदम पीछे खींच रहे हैं, तब भारत कुशलता के साथ दुनिया के साथ अपने संबंध स्थापित कर वैश्विक स्तर पर मची खींचतान में दखल देते हुए अपने लिए अनुकूल जगह बना रहा है। भारत ने जिस अंदाज में अपने दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया उससे यह लग रहा था कि वह कई पश्चिमी देशों के राष्ट्राध्यक्षों को ग्लोबल साउथ के विचारों को सुनने के लिए बाध्य कर रहा है।

बदलती विश्व व्यवस्था किसी एक देश के प्रभुत्व के अंत और साझा जिम्मेदारी की शुरुआत का संकेत है। हालांकि यह संक्रमण काल अनिश्चितताओं से भरा है, लेकिन यह भारत जैसे देशों के लिए वैश्विक नीतियों को आकार देने का एक स्वर्णिम अवसर भी है। भविष्य की शांति इस बात पर निर्भर करेगी कि ये नई शक्तियां आपस में प्रतिस्पर्धा करती हैं या एक 'नियम-आधारित व्यवस्था' की ओर सहयोग करती हैं। ■

विद्वत्ता से आर्थिक सशक्तिकरण तक नारी

शीतल गहलोत
राजनीतिक विश्लेषक

स्त्री के बिना संसार की परिकल्पना पूर्ण नहीं हो सकती। किसी सभ्यता की उपलब्धियां एवं श्रेष्ठता का मूल्यांकन करने का सर्वोत्तम आधार स्त्रियों की दशा का अध्ययन करना है। स्त्री दशा किसी भी संस्कृति का मानदंड मानी जाती है। भारत में महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान नहीं रही है। इसमें युग अनुरूप परिवर्तन होते रहे हैं। वेदों, पुराणों, महाकाव्यों में स्त्री के उच्च आदर्शों की प्रतिष्ठा मिलती है। प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति अद्वितीय थी। उन्हें समाज में उच्च स्थान और स्वतंत्रता प्राप्त थी। अविवाहित विद्वान कन्या का विवाह विद्वान वर से ही होता था। वर चुनने का महिलाओं को पूर्ण अधिकार था। समाज में कोई कुप्रथा नहीं थी। महिलाओं की शिक्षा पूर्णतः निशुल्क थी। उनका उपनयन संस्कार होता था। उनसे वैदिक यज्ञों में भाग लेने और मंत्रोच्चार करने की भी अपेक्षा की जाती थी। यहां तक की ऋग्वेद के कुछ सूक्त भी कवित्रियों द्वारा रचित थे। हमें विश्ववारा, लोपामुद्रा, लीलावती, मैत्रेई, क्षणुआ, गार्गी, घोषाल, उर्वशी, सास्वती आदि ढेरों विदुषी महिलाओं के उल्लेख मिलते हैं। प्राचीन भारत के सर्वाधिक विद्वान दार्शनिक याज्ञवल्यक की प्रसिद्ध पत्नी मैत्रेय अपने पति के साथ गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों पर चर्चा करती थी।

लीलावती महान गणितज्ञ थी। गार्गी ने याज्ञवल्यक के साथ दार्शनिक विषयों पर शास्त्रार्थ में भी भाग लिया था। आदिकाल से ही भारत में महिलाओं को साक्षात् देवी मानकर बहुत सम्मान दिया जाता था। मनुस्मृति के श्लोक 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता' अर्थात् 'जहां नारी की पूजा की जाती है, वहां साक्षात देवता निवास करते हैं।' इससे भारत में नारी सम्मान की पुष्टि होती है। भारत में नारी को अर्धांगिनी और सहधर्मिणी कहा जाता है। कोई भी धार्मिक अनुष्ठान स्त्री के बिना पूर्ण नहीं होता था। 8वीं शताब्दी में जब आद्य गुरु शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच अद्वैत वेदांत और पूर्ण मीमांसा दर्शन विषय पर शास्त्रार्थ हुआ, तो मंडन मिश्र की विदुषी पत्नी भारती ने दोनों के बीच हुए शास्त्रार्थ में निर्णायक की भूमिका निभाई थी।

शंकराचार्य की विजय के साथ शास्त्रार्थ समाप्त हुआ, लेकिन मंडन मिश्र की विदुषी पत्नी द्वारा पूछे गए गृहस्थ आश्रम संबंधी प्रश्नों ने शंकराचार्य को भी कुछ समय के लिए निरुत्तर कर दिया था। इस प्रकार ऐसे ढेरों साक्ष्य हैं, जिससे पता चलता है कि प्राचीन भारत में महिलाओं की नैतिकता का स्तर बहुत ऊंचा था। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक योगदान दिया। 12वीं शताब्दीतक हिंदू समाज में पर्दा प्रथा तक नहीं थी। पाणिनि ने महिला छात्रों के लिए छात्रावासों, छात्रशालाओं का उल्लेख किया है। धीरे-धीरे

समय बदला। 500 ईसा पूर्व से आज तक विदेशी आक्रमणकारियों के हमले और आगमन के बाद महिलाओं की स्थिति में भयंकर परिवर्तन हुए। और समाज में विभिन्न कुरीतियों का पदार्पण हुआ। आज दुनिया की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है। लेकिन फिर भी जीवन के कई पहलुओं पर महिलाओं को समान अवसर नहीं मिल रहे। इसके बाद भी आज शिक्षा,बेहतर स्वास्थ्य, आर्थिक सशक्तिकरण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, कानूनी अधिकार, सामाजिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में महिलाएं नित्य प्रति सफलता की कहानियां गढ़ रही हैं। विदुषी परंपरा और बौद्धिक नेतृत्व से हुनर के आधार पर खुद को साबित करके दुनिया को मुट्ठी में कर रही हैं। परिवार को संस्कारवान बनाने में स्त्री की भूमिका सर्वश्रेष्ठ है। वह ही श्रेष्ठ राष्ट्र बनाने के लिए श्रेष्ठ नागरिक तैयार कर सकती है। ऐसी लाखों ऊर्जावान महिलाओं की कहानी हमारे चारों तरफ बिखरी पड़ी है, जिसमें वह साधनहीन महिलाओं से लेकर सफल उद्यमी तक का सफर तय कर रही है। मोदी, योगी युग में ऐसी ही एक सफल कहानी -उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के टप्पल ब्लॉक क्षेत्र के भरतपुर गांव की सरपंच प्रधान नीलम देवी पत्नी अमित चौहान की है। जिन्होंने महज 4 वर्ष के अपने कार्यकाल में खुले में शौच मुक्त से लेकर अन्य बहुत सारी लाभकारी योजनाओं को गांव में क्रियान्वित कराया है। कूड़ा निस्तारण और जल प्रबंधन में भी विशेष उपलब्धि हासिल की है। उनके अनुकरणीय नेतृत्व, जन सेवा और उत्कृष्ट कार्य को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी सम्मानित किया है। नीलम जी महिलाओं के लिए महिला सशक्तिकरण की बेहतरीन मिसाल हैं। आज कितनी ही विपरीत परिस्थितियों में महिलाएं अवसर ढूंढ कर दुनिया के लिए उदाहरण बन रही हैं।

आज स्थानीय स्तर पर ऐसी लाखों महिलाएं रोजगार सृजन करके आत्मनिर्भरता की मिसाल प्रस्तुत कर रही हैं, जो स्वयं सहायता समूह और उद्यमिता के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। ये महिलाएं न केवल आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, बल्कि अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत भी बन रही हैं । उत्तर प्रदेश के बहराइच की शकुंतला देवी स्वयं सहायता समूह से जुड़कर हथकरघा मशीन द्वारा बेकार कपड़ों से दरी, पायदान बना रही हैं। जिसकी स्थानीय स्तर पर बड़ी मांग है। यूट्यूब के माध्यम से उत्तर प्रदेश के कौशांबी की आराधना मिश्रा ने धूपबत्ती बनाने की तकनीक सीखी और अपने ही नाम से ब्रांडिंग करके 10 से अधिक अन्य महिलाओं को भी रोजगार दिया। इसी प्रकार संभल के छोटे से गांव खग्गू पुर की मोनिका पिछले 3 साल से महिलाओं के सौंदर्य प्रसाधन में इस्तेमाल होने वाले उत्पादों को ऑर्गेनिक रूप से बना कर लखपति दीदी की श्रेणी को पार कर चुकी हैं। अलीगढ़ के हरदुआगंज क्षेत्र के बड़ा गांव उखलाना की सुजीता राघव ने वर्ष 2022 में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन से जुड़कर स्वरोजगार की शुरुआत की और 'श्री शुभांग' नाम से अपना ब्रांड बनाकर धूपबत्ती, धूप स्टिक और धूप कोन का उत्पादन शुरू किया और आज अच्छी गुणवत्ता और खुशबू के कारण जिले की सीमाओं से बाहर निकल कर देश के कई हिस्सों तक पहुंच कर काम कर रही हैं और महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त भी कर रही हैं।

महिलाओं की शिक्षा पूर्णतः निशुल्क थी। उनका उपनयन संस्कार होता था। उनसे वैदिक यज्ञों में भाग लेने और मंत्रोच्चार करने की भी अपेक्षा की जाती थी। यहां तक की ऋग्वेद के कुछ सूक्त भी कवित्रियों द्वारा रचित थे। हमें विश्ववारा, लोपामुद्रा, लीलावती, मैत्रेई, क्षणुआ, गार्गी, घोषाल, उर्वशी, सास्वती आदि ढेरों विदुषी महिलाओं के उल्लेख मिलते हैं। प्राचीन भारत के सर्वाधिक विद्वान दार्शनिक याज्ञवल्यक की प्रसिद्ध पत्नी मैत्रेय अपने पति के साथ गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों पर चर्चा करती थी।

यकीन मानिए अगर आपको अपने सपनों को पूरा करना है, तो कोई रास्ता ढूंढ कर अपने सपनों को पूरा करना आपकी अपनी जिम्मेदारी है। किसी और की नहीं। असफलता ही आगे बढ़ाने की सीढ़ी होती है। सीखने की आदत को मरने मत दीजिए। नैतिकता का स्तर ऊंचा रखिए। योग्यता के आधार पर खुद को दुनिया के सामने प्रस्तुत करिए। क्योंकि नारी केवल परिवार की धुरी ही नहीं, वह राष्ट्र की नियंता शक्ति है। यदि वह संकल्प कर ले, तो असंभव भी संभव हो जाता है। जब नारी सशक्त होती है तो समाज में चेतना आती है और जब नारी शिक्षित होती है, तो राष्ट्र प्रगति करता है। अहिल्याबाई, लक्ष्मीबाई, सीता, सावित्री, दुर्गा अनुसुइया गार्गी जैसी महिलाओं से प्रेरणा लेकर आगे बढ़िये। फिर देखिए मार्ग के सारे कंटक स्वयं समाप्त होने लगेंगे। ■

जीवन मूल्य सहेजती, परिवार परम्परा

पूनम भटनागर
लेखिका

राघव दोनों हाथों से सर पकड़ कर बैठा था, लगभग यही हाल सुलभा का भी था। तभी दोनों कातर स्वर में एक साथ बोल उठे, हमने यहां अलग आकर गलती तो नहीं कर दी? पहले पूरा परिवार दादा-दादी, राघव, सुलभा और दो बच्चे एक साथ एक ही घर में रहते थे। पर सुलभा को सास के साथ काम करना नहीं भाता, वह चाहती थी कि एक मुश्त उसका राज चले। बस वह नित नए झगड़े लेकर राघव को भडकाने लगी। फिर एक दिन ऐसा आया कि राघव अपने माता-पिता को छोड़कर, पत्नी एवं बच्चों के साथ अलग रहने चला गया। शुरू के कुछ दिन तो सुलभा बहुत खुश थी। पर जब नौकरी पर वापस जाना शुरू किया तो अनेक समस्याएं सिर उठाने लगीं। उन्हीं में से दस साल की रिंकु और आठ साल के सोनू को अकेला छोड़कर जाने की समस्या आयी। एक दिन जब वह दोनों घर आए तो देख कर हक्का बक्का रह गए कि दोनों बच्चे टीवी पर किसी एडल्ट फिल्म को देख रहे थे। पूछने पर बोले कि दोस्तों ने दी थी। डांटने पर बोले हम क्या करें, दादा-दादी भी नहीं हैं जो उनसे बात कर लें। अभी तक तो दादी स्कूल से आने पर उन्हें खाना खिलाकर सुला देती या पढ़ने बिठा देती। शाम को दादा जी के साथ पार्क चले जाते। वापस आकर पढ़ रहे होते तो दोनों आफिस से आते। एक तरफ तो दोनों बच्चे दादा-दादी के प्यार को मिस कर रहे थे, तो दूसरी तरफ उन्हें भी बच्चों की चिंता नहीं रहती थी। पर अब क्या हो सकता था। उन्हें एहसास हुआ कि परिवार उनके लिए कितना महत्वपूर्ण है। राघव और सुलभ दोनों को अलग आकर रहने का फैसला गलत लगने लगा।

यह सही है कि परिवार परंपरा हमें शारीरिक, भावनात्मक सुरक्षा कवच प्रदान करती है। परिवार जीवन की धुरी का काम करता है। एक साथ बड़ों के साथ मिलकर रहने में हम निस्वार्थ प्रेम तो सीखते ही हैं, साथ ही परिवार रूपी संस्कारशाला से जीवन का प्रथम पाठ भी पढ़ते हैं और संस्कार ग्रहण करते हैं। पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे अभी भी काफी जगह ये प्रचलन में है। पर आधुनिकीकरण और शहरीकरण ने एकल परिवार व्यवस्था को जन्म एवं बढ़ावा दिया। जहां संयुक्त परिवार में दो तीन पीढ़ियां एक साथ खुशियों को जन्म देती हैं और गम इकट्ठे बांटती हैं, बुजुर्ग व युवा पीढ़ी मिलकर एक सौहार्दपूर्ण वातावरण उत्पन्न करते हैं, एक दूसरे की समस्याओं को समझते हैं, और समाधान ढूंढते हैं। एक दूसरे के लिए मैं नहीं हम की भावना से कार्य करते हैं। परस्पर

सहयोग की भावना विकसित होती है। परिवार मनुष्यता की पहली सीढ़ी है जिसपर चढ़कर वह स्वयं का निर्माण करना सीखता है। आत्मकेंद्रित व उच्छृंखल व्यवहार ने मनुष्य को एकल परिवार में रहना सिखाया, जिसमें वह स्वार्थ पूर्ति सीखा। ऐसे में बड़ों के अनुभवपूर्ण जीवन से सीखने से वंचित रहने के कारण अनेकों नई समस्याओं से दो-चार भी होने लगा। एकाकी जीवन ने उसके अंदर संस्कारहीन व्यवहार को जन्म दिया, जो उसके स्वयं के अनुकूल नहीं था। साथ ही अपने बच्चों को भी भावनात्मक सुरक्षा न दे पाया। जहां परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला बन उन्हें शिक्षित करता, वहीं यह विघटित होता परिवार बच्चों में विघटन का भाव देता चला गया। वह भोग विलास, कटुता पैदा करता गया। युवा पीढ़ी पर कोई नियंत्रण न होने के कारण वह आत्मकेंद्रित हो गई। बच्चे छोटी उम्र में परिवार से दूर छात्रावास आदि में रहने को मजबूर हो गए। बड़ी संख्या में ऐसे बच्चे परिवार से दूर रह भौतिक दुनिया की चमक-धमक के प्रभाव में नशा खोरी तथा आपराधिक प्रवृतियों की ओर आकर्षित होते जा रहे हैं।

ऐसा नहीं है इसका असर सिर्फ युवा पीढ़ी तक ही सीमित रहा। युवा तो बड़ों की सुरक्षा और प्यार के अभाव में एकाकी होते गए। पहले बड़े लोग उनकी समस्याओं को समझ कर उचित समाधान देते थे, पर परिवार विहीनता ने उन्हें ऐसे दोराहे पर लाकर खड़ा कर दिया जिसमें कभी कभी तो आत्महत्या की नौबत ला दी। वहीं बुजुर्ग पीढ़ी समय पर उचित देखरेख न मिल पाने के कारण निराशा में उलझ कर रहने पर मजबूर हो गयी। कितने ही बुजुर्ग बढ़ती उम्र में उनकी ओर बढ़ने वाले हाथों को झटक दिए जाने से वृद्धाश्रम की शरण लेने पर मजबूर हो जाते हैं। वास्तव में दोनों पीढ़ियों के संतुलन से संयुक्त एवं संस्कारयुक्त परिवार परंपरा को जीवित रखा जा सकता है। यह मात्र एक आवश्यकता ही नहीं अपितु तेजी से बदलती दुनिया में अनिवार्य है, जहां भौतिक, तकनीकी एवं आर्थिक विकास ने सत्य, नैतिकता, ईमानदारी, निष्पक्षता, कर्तव्यपरायणता, अनुशासन, क्षमा, मित्रता, सहिष्णुता एवं विश्वास जैसे मानवीय गुणों का तेजी से क्षरण हो रहा है।

एक दिन ऐसा आया कि राघव अपने माता-पिता को छोड़कर, पत्नी एवं बच्चों के साथ अलग रहने चला गया। कुछ दिन बाद दोनों ने ऑफिस जाना शुरू किया तो अनेक समस्याएं सिर उठाने लगीं। उन्हीं में से दस साल की रिंकु और आठ साल के सोनू को अकेला छोड़कर जाने की समस्या आयी। एक दिन जब वह दोनों घर आए तो देख कर हक्का बक्का रह गए कि दोनों बच्चे टीवी पर किसी एडल्ट फिल्म को देख रहे थे। पूछने पर बोले कि दोस्तों ने दी थी। डांटने पर बोले हम क्या करें, दादा-दादी भी नहीं हैं जो उनसे बात कर लें। अभी तक तो दादी स्कूल से आने पर उन्हें खाना खिलाकर सुला देती या पढ़ने बिठा देती। शाम को दादा जी के साथ पार्क चले जाते। वापस आकर पढ़ रहे होते तो दोनों आफिस से आते। एक तरफ तो दोनों बच्चे दादा-दादी के प्यार को मिस कर रहे थे,

बड़ों को यह समझना चाहिए कि युवा पीढ़ी नए विचारों, सोच और पद्धति की द्योतक है। उनके अनुसार नया प्रचलन आवश्यक है। पर इसके लिए परिवार की बड़ी पीढ़ी को भुला देना उनके नैतिक मूल्यों का ह्रास करना होगा। परिवार परामर्श कर उन्हें उचित मान सम्मान देना युवा पीढ़ी का कर्तव्य है। साथ ही बुजुर्ग पीढ़ी को भी बच्चों से उचित तालमेल बनाकर चलने की आवश्यकता है। पूर्व की अपनी व्यवस्था को ही आदर्श मानते हुए क्रमिक विकास, नवीनतम ज्ञान तथा यथार्थ को नकारते रहने से पीढ़ियों तथा परिवारों में दूरियां बढ़ेंगी। हर बात पर नुक्ता चीनी व्यक्तित्व विकास के लिए हानिकारक होती है। याद रखिए परिवार परंपरा जीवन मूल्यों को सहेजती है।

वह मानसिक व भावनात्मक वृद्धि कर व्यक्ति को आत्मसम्मान से जीवित रहना सिखाती है जिसके लिए परिवार के हर सदस्य को जिम्मेदार बन सहयोग करना आवश्यक है। अगर हम इकट्ठे भोजन, भजन करने में संगठित होकर गमन करें तो कोई कारण नहीं कि परिवार परंपरा को जारी न रख पाएं। एक परिवार संगठित होता है तो उसका प्रभाव समाज पर पड़ता है क्योंकि कई परिवार मिलकर समाज का निर्माण करते हैं और समाज से ही राष्ट्र निर्मित होता है। अतः परिवार को चलाने के लिए अपने जीवन मूल्यों को सहेजना आवश्यक है। ■

जब अभिनेत्री मुमताज ने कहा- "मुसलमान हिंदुओं से बेहतर कैसे हो जाते हैं?"

डॉ. मयंक चतुर्वेदी
वरिष्ठ पत्रकार

सिनेमा अक्सर कलाकारों की निजी सोच और अनुभव के आधार पर समाज को आइना दिखाता है। सत्तर के दशक की लोकप्रिय अभिनेत्री 'मुमताज' ने हाल ही में एक साक्षात्कार में विवाह, धर्म और सामाजिक सोच को लेकर ऐसी बेबाक टिप्पणी की, जिसने संपूर्ण भारतीय समाज को एक आइना दिखाया है। एक मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने अपने अनुभवों के आधार पर हिंदू परिवार व्यवस्था की भरपूर सराहना की और बहुविवाह जैसी प्रथाओं पर सवाल उठाते हुए कहा कि 'किसी भी धर्म में स्त्री के अधिकारों और सम्मान से बड़ा कुछ नहीं हो सकता है।'

भारतीय सिनेमा का सत्तर का दशक परिवर्तन के दौर का साक्षी रहा है। तकनीक बदल रही थी, कहानियों का स्वरूप बदल रहा था, सिनेमा ब्लैक-एंड-व्हाइट से रंगीन दौर की जगमगाहट में प्रवेश कर रहा था और उसी समय पर्दे पर अभिनेत्री 'मुमताज' का उदय हुआ, जिसने अपने अभिनय, सौंदर्य और भावनात्मक अभिव्यक्ति से दर्शकों के दिलों में खास जगह बनायी। 'मुमताज' ने अपने करियर में कई यादगार फिल्में दीं। उस दौर में उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक रही कि निर्माता-निर्देशक उन्हें अपनी फिल्मों में लेने उत्सुक रहते। उनकी फिल्मों में भावनाओं की गहराई, नृत्य की लय और अभिनय की सहजता देखने को मिलती। यही कारण है जो आज नई पीढ़ी की अभिनेत्रियां भी उनके अभिनय को देखकर भावों के उतार-चढ़ाव की बारीकियां सीखने की बात कहती हैं।

'मुमताज' और उनकी बहन दोनों ने किया हिन्दू परिवार में विवाह : दरअसल, हाल ही में 'मुमताज' ने यूट्यूब चैनल 'सितारों का सफर' के लिए एक 'साक्षात्कार' किया है। स्वयं के जीवन से जुड़ी तमाम कहानियों के बीच वे अपने आप को ये कहने से रोक नहीं सकीं कि उन्होंने एक हिन्दू परिवार में विवाह किया है, न सिर्फ उन्होंने बल्कि उनकी बहन ने भी हिन्दू परिवार में ही विवाह किया। वास्तव में हिन्दू जीवन और परिवार आदर्श है। वे कहती है, "मैं दोनों धर्मों में विश्वास रखती हूं। मैंने एक हिंदू से शादी की है और मेरी बहन ने भी एक हिंदू से शादी की है। हम दोनों खुश हैं। मेरे पति मेरा बहुत ख्याल रखते हैं। मुझे समझ नहीं आता कि लोग हिंदू और मुस्लिम विभाजन की बात क्यों करते रहते हैं, मैं इसमें विश्वास नहीं करती।"

जब उनका करियर सफलता के शिखर पर था, तब उन्होंने एक ऐसा निर्णय लिया जिसने पूरी फिल्म इंडस्ट्री को चौंका दिया। वर्ष 1974 में उन्होंने व्यवसायी मयूर माधवानी से विवाह कर लिया और फिल्मों से दूरी बना ली। मुमताज और मयूर माधवानी की दो बेटियां हैं; नताशा माधवानी और तान्या माधवानी। उन्होंने बताया कि यह निर्णय उनके परिवार की सलाह से लिया गया था। उनकी मां ने उन्हें समझाया कि माधवानी परिवार बहुत अच्छा है और वहां उन्हें सुखी जीवन मिलेगा।

'मुमताज' के अनुसार उनके परिवार में एक निश्चित समय पर विवाह करना जरूरी माना जाता था, इसलिए उन्होंने अपने सभी फिल्मी प्रोजेक्ट जल्द से जल्द पूरे किए। जिन फिल्मों में अधिक समय लगने वाला था, उनके लिए उन्होंने निर्माताओं को पैसे भी वापस कर दिए। फिल्मों से दूरी बनाने और उन्हें पूरा करने में उन्हें लगभग दो वर्ष लगे, क्योंकि पहले से किए गए अनुबंध पूरे करना जरूरी था। लेकिन आज वे इस निर्णय को अपने जीवन का सबसे संतुलित और सुखद फैसला मानती हैं।

मुसलमानों का बहुविवाह गलत : इस बातचीत के दौरान मुमताज ने कुछ मुस्लिम समाजों में प्रचलित बहुविवाह की प्रथा पर भी खुलकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा कि वे व्यक्तिगत रूप से इस प्रथा से सहमत नहीं हैं। उनका मानना है कि हर स्त्री अपने पति से प्रेम करती है और उसे किसी और के साथ बांटना नहीं चाहती। ऐसे में यदि कोई पुरुष एक के बाद दूसरी, तीसरी या चौथी शादी करता है, तो यह रिश्तों की गरिमा के खिलाफ है। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि कोई पुरुष बार-बार विवाह करके अपनी पत्नी को छोड़ देता है, तो इससे वह किसी दूसरे धर्म के लोगों से बेहतर कैसे हो जाता है। उनके अनुसार विवाह का अर्थ जिम्मेदारी और प्रतिबद्धता है, न कि सुविधा के अनुसार रिश्ते बदल लेना।

उन्होंने कहा, "मैं हमेशा कहती हूं कि मैंने एक हिंदू से शादी की है, मेरी बहन ने भी और हम बहुत खुश हैं। मुसलमानों में, कई पुरुष तीन या चार बार शादी करके अपनी पत्नियों को छोड़ देते हैं। इससे मुसलमान हिंदुओं से बेहतर कैसे हो जाते हैं? किसी पुरुष को तीन या चार बार शादी करनी ही नहीं चाहिए। मैं खुद मुस्लिम हूं और मैं कहती हूं कि यह गलत है, एक पत्नी को रखना, फिर दूसरी से शादी करना, और फिर तीसरी से। क्या आपने कभी सोचा है कि रिश्ते में महिलाएं कितनी अधिकार जताने वाली होती हैं? यह एक ऐसा रिश्ता है जहां हर महिला अधिकार जताने वाली होती है। एक को छोड़कर दूसरी से शादी करना, यह कैसे सही है? क्या यह पाप नहीं है?"

हिंदू परिवारों में विवाह है स्थायी और पवित्र बंधन : मुमताज ने कहा कि उनके अनुभव में अधिकांश हिंदू परिवारों में विवाह को स्थायी और पवित्र बंधन माना जाता है। आमतौर पर लोग एक ही बार विवाह करते हैं और जीवन भर उसी रिश्ते को निभाने का प्रयास करते हैं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि कभी-कभी दूसरी शादी की घटनाएं भी होती हैं, लेकिन इसे सामान्य या आसान विकल्प नहीं माना जाता। उनके अनुसार रिश्तों को निभाने की यह सोच परिवार को स्थिरता देती है और स्त्रियों को सुरक्षा का भाव भी प्रदान करती है।

हाल ही में 'मुमताज' ने यूट्यूब चैनल 'सितारों का सफर' के लिए एक 'साक्षात्कार' किया है। स्वयं के जीवन से जुड़ी तमाम कहानियों के बीच वे अपने आप को ये कहने से रोक नहीं सकीं कि उन्होंने एक हिन्दू परिवार में विवाह किया है, न सिर्फ उन्होंने बल्कि उनकी बहन ने भी हिन्दू परिवार में ही विवाह किया। वास्तव में हिन्दू जीवन और परिवार आदर्श है। वे कहती है, मैं दोनों धर्मों में विश्वास रखती हूं। मैंने एक हिंदू से शादी की है और मेरी बहन ने भी एक हिंदू से शादी की है। हम दोनों खुश हैं।

उन्होंने कहा कि हर स्त्री अपने पति को प्रेम करती है और वह उसे बांटना नहीं चाहती, ये क्या बात हुई, एक लियाओ, दो लियाओ, तीन लियाओ या चार लियाओ? उन्होंने कहा, "इस लिहाज से हिंदू बेहतर लगते हैं, वे आमतौर पर एक ही बार शादी करते हैं। कभी-कभी वे दो बार भी शादी कर सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे आसानी से एक व्यक्ति को छोड़कर दूसरे के पास चले जाते हैं। यह गलत है।"

मुस्लिम होते हुए भी हिंदू देवी-देवताओं में आस्था : धर्म के बारे में बात करते हुए मुमताज ने यह भी बताया कि वे जन्म से मुस्लिम हैं, लेकिन उनके मन में हिंदू देवी-देवताओं के प्रति गहरी श्रद्धा है। उन्हें विशेष रूप से भगवान शिव और भगवान श्रीकृष्ण में आस्था है। उनके घर की सीढ़ियों के पास भगवान गणेश की मूर्ति रखी है, जिसे वे प्रतिदिन प्रणाम करती हैं। उनका कहना है, 'मेरे प्रिय भगवान शंकर और भगवान कृष्ण हैं। मैं मुस्लिम होते हुए भी उनमें गहरी आस्था रखती हूं।'

उन्होंने आगे बताया कि घर पर उनकी दिनचर्या में धार्मिक अनुष्ठान शामिल हैं। 'जब भी मैं घर की सीढ़ियों से नीचे उतरती हूं, तो वहां भगवान गणेश की मूर्ति होती है, जो मेरे प्रिय हैं और मैं उनके चरणों में प्रणाम करती हूं। मैं भगवान शंकर में भी आस्था रखती हूं। बचपन से ही मुझे सुंदर और दिव्य प्रतीकों की ओर आकर्षण रहा है, इसलिए मुझे भगवान शिव का स्वरूप अत्यंत आकर्षक और आध्यात्मिक लगता है। मुझे लगता है कि वह सबसे सुंदर देवता हैं। इसलिए मैं उन्हें पूजती हूं। ये दो देवता हैं जिनमें मैं विशेष रूप से विश्वास करती हूं।'

निजी जीवन में संतोष और संतुलन : मुमताज ने अपने वैवाहिक जीवन के बारे में भी बड़ी सहजता से बात की। उन्होंने कहा कि उनके पति उनका बहुत ध्यान रखते हैं और उन्हें जीवन में किसी चीज की कमी महसूस नहीं होती। उनके अनुसार जीवन की असली सफलता सिर्फ पेशेवर उपलब्धियों तक सीमित नहीं मानी जानी चाहिए, वह वास्तव में परिवार की खुशियों में छिपी होती है। यही कारण है कि फिल्मों की चमक-दमक से दूर होकर भी वे अपने निर्णय से संतुष्ट हैं। ■

कुरुक्षेत्र के युद्ध का सबसे प्रलयंकारी 14 वां दिन

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

कुरुक्षेत्र की रणभूमि में कौरव और पाण्डवों के मध्य युद्ध का 14 वां दिन सबसे विनाशकारी माना जाता है। इसके एक दिन पहले 13 वें दिन कौरव पक्ष के सेनापति द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की थी। उस दिन युद्ध के सारे नियम भंग करके अर्जुन और सुभद्रा के 16 वर्ष के वीर पुत्र अभिमन्यु का वध 07 महारथियों ने एक साथ मिलकर किया था।।

प्रातःकाल ही श्रीकृष्ण को यह सारी सूचना प्राप्त हो गई। उन्होंने अर्जुन को सावधान करते हुए कहा कि आज का दिन अत्यंत भीषण और निर्णायक होगा। उन्होंने विशेष रूप से यह निर्देश दिया कि युधिष्ठिर की सुरक्षा सर्वोपरि होनी चाहिए और अर्जुन को अपनी प्रतिज्ञा 'जयद्रथ वध' को हर स्थिति में पूर्ण करना होगा।

अर्जुन अपने सखा और आराध्य के शिविर से सीधे भीम के शिविर में गये। वहीं युधिष्ठिर भीम से कुछ मंत्रणा कर रहे थे। अर्जुन ने दोनों भाइयों को नमन किया। फिर कहा कि आज का दिन बहुत विनाशकारी युद्ध का होगा। कौरव पक्ष कपट की हदें पार करता दिखेगा। भीम को निर्देश दिया गया कि वे नकुल और सहदेव के साथ मिलकर युधिष्ठिर की रक्षा करें और उन्हें किसी भी स्थिति में अकेला न छोड़ा जाए।

यह युद्ध ईसा काल गणना प्रारम्भ होने से 3102 वर्ष पहले हुआ था। कुरुक्षेत्र के रण में अर्जुन आज महाकाल बनकर उतरे। श्रीकृष्ण का रथ आज मानो किसी महाप्रलय के लिए उदित हुआ है।। जयद्रथ को भू लुण्ठित करना है। इसी बीच अर्जुन को अपने पुत्र अभिमन्यु की स्मृति आई उसकी युद्धकला, उसके शब्द, और उसका वीरतापूर्ण अंत। इस स्मरण ने अर्जुन के क्रोध को और प्रज्वलित कर दिया, और उन्होंने और भी तीव्रता से युद्ध करना प्रारंभ किया।

महाभारत के इस दिन अर्जुन ने कर्ण के विरुद्ध बहुत प्रचण्ड युद्ध किया। पर सामान्यतया कोई बड़ा दिव्यास्त्र नहीं चलाया। जबकि कई दिव्यास्त्र चलाकर कर्ण ने एक बार भी अर्जुन को निःशस्त्र करने में सफलता नहीं पायी। हां इस दिन कर्ण अर्जुन को बहुत देर उलझाये रहा। अन्ततः श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा इसे छोड़ो। मुझे आगे बढ़ना है। कर्ण खीझता हुआ चिल्लाया पर अर्जुन ने श्रीकृष्ण की बात मानी। आगे बढ़ते ही एक साथ 17 बड़े योद्धा अर्जुन पर टूट पड़े। इनमें सबसे आगे अर्जुन ने कर्ण के पुत्र वृषकेतु को देखा। कृष्ण जी उससे किनारा करना चाहते थे तभी उसने कृष्ण पर एक बहुत तीखा विष युक्त वाण छोड़ा। जो श्रीकृष्ण की भुजा में लगा। अर्जुन ने इत्ती ढिठाई क्षम्य नहीं मानी। ऐसा कर्कुट तीर चलाया जो वृषकेतु का मुण्ड लेकर उसके पिता कर्ण के रथ पर जा गिरा। पुत्र का सिर देखकर कर्ण उस दिन विलाप करने लगा।

अर्जुन ने इस दिन जयद्रथ से पहले जिन 17 बड़े योद्धाओं रथियों, महारथियों और राजाओं का उनकी सेनाओं के साथ संहार किया उनमें वृषकेतु, कलिंगराज, संग्रामजीत, सुशर्मा, भानुमान, केतुमान, सुतायुद्ध, सुदक्षिण के साथ ही महाप्रतापी कहे जाने वाले अनेक वीर सम्मिलित थे।

उस दिन सांझ होने तक द्रोणाचार्य ने कर्ण, कृपाचार्य, अश्वस्थामा और दुर्योधन के परामर्श से युद्ध की कुल छह जटिल ब्यूह रचनाओं में अर्जुन को उलझाया। इसका इतना ही फल उनको मिला कि कौरव जयद्रथ को सांझ तक बचाये रखने सफल रहे। पर दुर्योधन बहुत डरा हुआ बड़बड़ाता फिरता रहा। वह कभी द्रोण पर तो कभी कृपाचार्य, अश्वस्थामा पर गरजने लगता। उधर सांझ ढलने को थी।

सूर्य जब अचानक लुप्त हुआ : संध्या होते देख अर्जुन को लगा कि प्रण पूर्ण न हो सकेगा और वे चिंता की ओर उद्यत हुए। गाण्डीव हाथ से छूटने को तैयार नहीं था और तरकश दिव्यास्त्रों से भर उठा, तभी श्रीकृष्ण शांत भाव से रथ से उतर गए, जबकि कौरव पक्ष उपहास कर रहा था।

कौरव पक्ष के सेनापति द्रोण और अर्जुन के प्रचण्ड शत्रु कर्ण दोनों साथ खड़े थे। पर मौन थे। कृपाचार्य ने अश्वस्थामा के साथ आकर द्रोणाचार्य से कुछ कहा। पर उन्हें उत्तर नहीं मिला। तभी जयद्रथ हुंकारता उसी ओर आ गया। कौरव पक्ष के मूर्ख अति उग्र तो पाण्डु पुत्रों के पक्ष के सारे महारथी और वीर बारम्बार श्रीकृष्ण की ओर निहार रहे थे। युधिष्ठिर पूरी तरह आश्वस्त थे कि प्रभु की लीला शेष है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ही नहीं धर्म और सत्य को अजेय सिद्ध करने के लिए यह महायुद्ध नियोजित किया है। युधिष्ठर ने तीन भाईयों भीम और माद्री पुत्रों नकुल सहदेव को अपने स्पर्श से आश्वस्त किया।

चिता सजाने में कौरव पक्ष के क्षुद्र लोग सहायता करते लकड़ियां लाते दिखे। अर्जुन शान्त भाव से अपने प्रण पालन को उद्यत थे। श्रीकृष्ण को निर्णय करना था- उनका मित्र अर्जुन आज अपने किस प्रण को पूरा करेगा। अब तो जयद्रथ सीधे चिता स्थल के निकट आकर खड़ा हो गया है। दुर्योधन के संकेत पर उनका एक सेवक प्रज्ज्वलित लकडियां ले आया। यह लकडियां चिता से निकट जानबूझ कर रखी गयीं।

अर्जुन के निहारने पर श्रीकृष्ण ने संकेत दिया और कहा कि अपना प्रण पूर्ण करो। उसी क्षण सूर्य प्रकट हुआ, गाण्डीव संधान हेतु तैयार हुआ और अर्जुन ने दिव्य बाण से जयद्रथ का

मस्तक काट दिया, जो आकाश में दूर जा गिरा, जबकि उसका धड़ चिता के निकट पड़ा रहा।

कुरुक्षेत्र में 14वें दिन की रात से पहले, जयद्रथ और अपने 13 भाइयों के वध से विचलित दुर्योधन ने, शकुनि के उकसावे में आकर द्रोणाचार्य और कर्ण के मना करने के बावजूद निशा युद्ध की घोषणा कर दी, यह मानते हुए कि पाण्डु पुत्र इसमें प्रवीण नहीं हैं।

यह बात अर्जुन और भीम ने सुनी तो अचकचा गये। श्रीकृष्ण ने दोनों को समझाया कि उनके इस प्रस्ताव को मान लीजिए। कारण फिर बताऊंगा। श्रीकृष्ण के कहने पर सेनापति धृष्टद्युम्न ने यज्ञघोष नामक शंख बजाने के लिए उठा लिया। तभी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपना देवदत्त और भीम को पौण्ड्र नामक शंख एक साथ बजाकर शत्रु पक्ष की ओर से मिली निशा युद्ध की गम्भीर चुनौती स्वीकार कर लेने को कहा। यद्यपि यह सभी श्रीकृष्ण के निर्णय पर संशय से ग्रस्त लग रहे थे। पर निष्ठावान थे।

पाण्डवों द्वारा निशा युद्ध स्वीकार करने पर द्रोण, कर्ण, दुर्योधन और शकुनि उसका उपहास कर रहे थे, तभी श्रीकृष्ण ने भीम को बुलाकर घटोत्कच को आहूत करने का निर्देश दिया। निशा युद्ध मायावी शक्तियों पर आधारित था, जिसमें द्रोण और कर्ण प्रवीण थे, जबकि अर्जुन आश्वस्त नहीं थे। घटोत्कच, जो भीम और हिडिम्बा का पुत्र था, इस युद्ध में अत्यंत दक्ष माना जाता था और इन्द्र द्वारा भी उसे मायावी युद्ध का श्रेष्ठ नायक स्वीकार किया गया था।

इत्ती पृष्ठभूमि यह स्पष्ट करने के लिए बहुत है कि 14 वें दिन की रात में हुए निशा युद्ध में किसकी दक्षता और मायावी शक्तियों का बोलबाला रहा होगा। कुरुक्षेत्र के 14वे दिन के युद्ध में जितने लोग मारे गये थे उसके दो गुना उस रात में मरे। रणभूमि में घटोत्कच आग बरसता तो कभी आकाश से भारी ओले-पत्थर ऐसे गिरते कि हाहाकार मच जाता।

निशा युद्ध को अपने पक्ष में करने हेतु कर्ण और द्रोण ने योजना बनाई कि घटोत्कच को कुछ समय नजरअंदाज कर छल से पाण्डु पुत्रों का वध किया जाए। दोनों ओर से दिव्यास्त्रों का भीषण संहार हुआ, पर श्रीकृष्ण के संकेत पर घटोत्कच के प्रहार से कौरव सेना में हाहाकार मच गया और वे प्राण बचाने को विवश हो गए, यहां तक कि दुर्योधन को छिपना पड़ा।

अस्त्र नहीं है जिससे घटोत्कच मारा जा सके । कर्ण ने कहा ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करने से कोई नहीं बचेगा। दुर्योधन ने कहा कर्ण तुम ही इस राक्षस से हम सब को बचा सकते हो। यह संवाद चल ही रहा था कि तेज अंधड़ के साथ सर्प, जहरीले जीव और मनुष्य की गर्दन में डंक मार कर रक्त पीने वाले बड़े कीटों के झुण्ड सर्वत्र छा गये। डर कर सेनाएं भागने लगीं।

घटोत्कच का बलिदान : दुर्योधन का सब्र टूट गया। कर्ण को कंधे से पकड़ कर दुर्योधन ने घटोत्कच को मार गिराने को बाध्य किया। कर्ण ने कहा मेरे पास केवल एक ऐसी शक्ति है जिसे अर्जुन के लिए मैंने बचा रखा है। इसे इन्द्र ने तब दिया था जब मुझसे कवच कुण्डल मांगे थे। उसी शक्ति पर भरोसा है कि वह घटोत्कच का अन्त कर देगी। दुर्योधन अड़ गया। उसी के हठ पर कर्ण ने घटोत्कच के अन्त के लिए वासवी नाम के दिव्य अस्त्र का संधान करने का निश्चय किया था। कर्ण ने जैसे ही वासवी को प्रत्यंचा का स्पर्श कराया सारा आकाश घनघोर गर्जना से कम्पित हो उठा। समस्त मायावी राक्षसी उत्पात ठप हो गये। रणभूमि में उपस्थित गिने चुने योद्धाओं के पांव ही भूमि पर टिके रह सके।

अन्य सभी संधान से पहले ही स्वतः औंधे मुंह गिरने लगे। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा अपनी सेना को जहां तक सूचना दे सको उनसे कहो शस्त्रादि भूमि पर रख दें। उल्टे मुंह लेट जाएं। कोई अपने धनुष पर संधान नहीं करे। अन्यथा वह स्वयं नष्ट हो जाएगा।

श्रीकृष्ण के अतिरिक्त इस दिव्य अस्त्र के बारे में पूर्णतया किसी योद्धा को ज्ञान नहीं था। यह दिव्यास्त्र पक्ष विपक्ष नहीं देखता अस्त्र शस्त्र लिये जो भी रणक्षेत्र में खड़ा दिखेगा वह मरेगा।

महाभारत के युद्ध से पूर्व इन्द्र को जब पता चला कि कवच कुण्डल धारी कर्ण अर्जुन को मार देने की प्रतिज्ञा किये प्रतीक्षारत है तो इन्द्र ने अर्जुन से मोह के चलते कर्ण से कवच कुण्डल दान में ले लिये थे। पर उसकी उदारता देख वासवी शक्ति इन्द्र ने दी थी।

श्रीकृष्ण ने उनसे कहा था - हे इन्द्र एक हाथ से अर्जुन के शत्रु को दुर्बल करने का यत्न किया पर वासवी देकर संकट बढ़ा दिया। उन्होंने इन्द्र से कहा था युद्ध का 14 वां दिन बीतने पर निशा युद्ध होगा। तब उसका प्रभाव देखने के लिए प्रत्यक्ष आप भी कुरुक्षेत्र की रणभूमि में मेरे निकट बने रहना।

श्रीकृष्ण के अतिरिक्त और कोई नहीं जानता था कि वासवी अस्त्र आज क्या करेगा। इन्द्र और कर्ण भी नहीं। कर्ण इससे अनभिज्ञ था। श्रीकृष्ण ने इस वासवी दिव्यास्त्र के संधान से पूर्व घटोत्कच को युद्ध और तीव्र करने का संकेत किया था। जबकि पूरी पाण्डु सेना के आयुध रखवा दिये। घटोत्कच के अतिरिक्त पांडवों की सेना के अन्य महारथियों तक को रोक दिया गया था।

तात्पर्य स्पष्ट है कि वासवी से घटोत्कच ही नहीं मरा बल्कि कौरव पक्ष की बहुत बड़ी सैन्य हानि अज्ञान के कारण हो गयी। घटोत्कच बहुत कुशल योद्धा था। वासवी से परिचित था। मरने से पहले आकार बहुत बड़ा और भारी कर लिया था। श्रीकृष्ण ने उसे यही कहा था। वह कौरव सेना पर जब गिरा तो बहुत बड़ी जनहानि हानि हुई। घटोत्कच का शरीर गिरते ही युद्ध बन्द हो गया।

श्रीकृष्ण घटोत्कच के शरीर के पास पहुंचे और उसे प्रणाम किया। भीम को देखकर घटोत्कच ने प्रसन्न होकर उनके चरण स्पर्श किए और कहा कि वह सौभाग्यशाली है कि अंतिम क्षणों में पिता और श्रीकृष्ण के दर्शन हुए। माता का संदेश सौंपकर "जय श्रीकृष्ण" कहते हुए उसने प्राण त्याग दिए। ■

जैव विविधता का गहराता संकट

ज्ञानेन्द्र रावत
वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद्

आज समूची दुनिया में जैव विविधता का संकट गहराता जा रहा है। इस बारे में यदि अंतर सरकारी विज्ञान नीति मंच आन बायोडायवर्सिटी एण्ड ईकोसिस्टम सर्विसेज और विश्व जैव विविधता प्राधिकरण की मानें तो दुनिया में 10 लाख पशु और पादप प्रजातियों पर विलुप्ति का संकट मंडरा रहा है। जैव विविधता में गिरावट की यह दर मानव इतिहास में किसी भी अन्य समय की तुलना में सर्वाधिक है। इससे पारिस्थितिक तंत्र, खाद्य सुरक्षा और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा हो गया है। यही नहीं संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम सम्मेलन की रिपोर्ट के अनुसार मानवीय गतिविधियों ने धरती की 70 फीसदी जमीन को तो पहले ही बदल दिया है जिससे इसका 40 फीसदी हिस्सा खराब हो गया है। और तो और मानव की कारगुजारियों के चलते महासागर के 87 फीसदी हिस्से को भी बदलकर रख दिया है। वैश्विक स्तर पर देखें तो 1970 से 2016 के बीच स्तनधारियों, सरीसृपों और मछलियों की आबादी में 68 फीसदी की कमी आई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसकी पुष्टि की है। यह खतरनाक संकेत है।

जहां तक भारत का सवाल है, हमारी सरकारें जैव विविधता संरक्षण के दावे-दर-दावे कर रही है और वृक्षारोपण के माध्यम से जैव विविधता के क्षरण को पाटने का अभियान चला रही है। ऐसे समय यहां वृक्षारोपण और प्राकृतिक वन के बीच पारिस्थितिक अंतर को समझना आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। आधिकारिक रिपोर्टें भले कुल वन आच्छादन में स्थिरता या मामूली वृद्धि का संकेत दें, किंतु विशेषज्ञ लगातार यह रेखांकित कर रहे हैं कि वृक्षारोपण से तैयार हरियाली और प्राकृतिक, बहुस्तरीय, जैविक रूप से समृद्ध वन एक-दूसरे के पर्याय नहीं हैं। प्राकृतिक वन सैकड़ों वर्षों में विकसित होते हैं, जिनमें पेड़-पौधों, सूक्ष्मजीवों, कीटों, पक्षियों और स्तनधारियों का जटिल पारिस्थितिक जाल मौजूद रहता है। इसके विपरीत, एकल प्रजाति आधारित वृक्षारोपण या वाणिज्यिक प्लांटेशन अक्सर जैव विविधता की दृष्टि से सीमित होते हैं। इसी बुनियादी अंतर को नजरअंदाज करने का परिणाम है कि देश जैव विविधता के गहराते संकट से जूझ रहा है और दिनोंदिन इसके स्तर में क्षरण हो रहा है ।

सच तो यह है कि विकास की दौड़ में हांफती प्रकृति, तेजी से बढ़ता प्रदूषण, भयावह स्तर तक फैलता शहरीकरण और अनियोजित विकास ने प्राकृतिक वनों पर व्यापक दबाव डाला है। पश्चिमी घाट क्षेत्र जिसमें गोवा, केरल और कर्नाटक के हिस्से शामिल हैं लंबे समय से जैव विविधता का वैश्विक हॉटस्पॉट माने जाते हैं। विभिन्न अध्ययनों में संकेत मिला है कि इस क्षेत्र के मूल वनों और विशिष्ट पारिस्थितिक तंत्रों का बड़ा हिस्सा खनन, कृषि विस्तार, बांधों और शहरीकरण से प्रभावित हुआ है। परिणामस्वरूप अनेक स्थानिक प्रजातियां संकटग्रस्त हुई हैं। उत्तर-पूर्वी भारत में भी वनों की कटाई, अवैध शिकार और भूमि उपयोग परिवर्तन ने पारिस्थितिक संतुलन को कमजोर किया है।

यहां हिमालय, पश्चिमी घाट, इंडो-बर्मा और सुंडालैंड क्षेत्र चार प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पॉट माने जाते हैं। भारत विश्व के 17 मेगा जैव विविधता संपन्न देशों में शामिल है।

विश्व के कुल भूभाग का लगभग 2.4 प्रतिशत हिस्सा होने के बावजूद यहां वैश्विक प्रजातियों का लगभग 7 से 8 प्रतिशत पाया जाता है। जूलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अभिलेखों के अनुसार देश में 96,000 से अधिक जीव-जंतुओं और लगभग 47,000 पौधों की प्रजातियां दर्ज हैं। देश के 10 प्रमुख जैव-भौगोलिक क्षेत्रों वर्षावन, रेगिस्तान, मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियां, घासभूमियां और पर्वतीय पारिस्थितिक तंत्र में विशिष्ट जैविक संपदा मौजूद है।

प्रकृति की चेतावनी को समझें : पेड़ और जंगल केवल हरियाली का प्रतीक नहीं, बल्कि पृथ्वी की जीवन रक्षक प्रणाली का आधार हैं। स्थलीय जैव विविधता का बड़ा हिस्सा वनों पर निर्भर है। प्राकृतिक वन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर जलवायु को संतुलित रखते हैं, मृदा अपरदन रोकते हैं, जलस्रोतों को संरक्षित करते हैं और असंख्य प्रजातियों को भोजन व आश्रय देते हैं। किंतु जब प्राकृतिक वन कटते हैं और उनकी जगह एकल प्रजाति के वृक्षों का रोपण किया जाता है, तो पारिस्थितिकीय जटिलता और जैविक विविधता का वह स्तर पुनर्स्थापित नहीं हो पाता। यही कारण है कि "नेट फॉरेस्ट कवर" में वृद्धि के बावजूद जैव

विविधता में गिरावट की चिंता व्यक्त की जा रही है जो खतरनाक संकेत है। दुनिया के वैज्ञानिक बार-बार कह रहे हैं कि इंसान जैव विविधता के खात्मे पर आमादा है। अब तो वह समृद्ध जैव विविधता वाली भूमि कब्जाने में लगा है। 87 फीसदी विविधता से समृद्ध भूमि पर कब्जे की होड इसका जीता-जागता सबूत है।

जलवायु परिवर्तन इस संकट को और गहरा कर रहा है। वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि यदि वैश्विक तापमान वृद्धि को सीमित नहीं किया गया तो इस सदी के अंत तक प्रवाल भित्तियों का बड़ा हिस्सा समाप्त हो सकता है। सुंदरवन के मैंग्रोव वन, समुद्र-स्तर वृद्धि और चक्रवातों से जूझ रहे हैं। हिमालयी क्षेत्र में हिम तेंदुए जैसी प्रजातियां आवासीय क्षेत्र में बदलाव और मानवीय दबाव के कारण संवेदनशील स्थिति में हैं। कीट-पतंगों और परागण तंत्र के जीवनचक्र में बदलाव के संकेत मिले हैं, जो कृषि उत्पादन पर भी प्रभाव डाल सकते हैं।

हरियाली की गिनती या पारिस्थितिकी? : संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार 1990 से 2020 के बीच भारत में करोड़ों हेक्टेयर वन क्षेत्र का शुद्ध ह्रास हुआ है। 2015 से 2020 के बीच के पांच सालों में 6,68,400 हेक्टेयर वनों का खात्मा हुआ। यह आंकड़ा दुनिया में ब्राजील के बाद दूसरा सबसे ज्यादा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 1990 से 2020 के बीच 42 करोड़ हैक्टेयर जंगलों का सफाया हुआ। भले इसके प्राकृतिक कारण रहे हों या मानवीय। देश में खनन, सड़क, उद्योग के नामपर साल 2014 से 2019 तक एक करोड नौ लाख पचहत्तर हजार आठ सौ चवालीस पेड काटे गये। आंकड़ों की मानें तो इस दौरान 20 गुणा से अधिक जंगल विकास यज्ञ की समिधा बने हैं। तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल इस मामले में सर्वाधिक प्रभावित राज्य हैं। हकीकत यह है कि हर साल तकरीबन 22 लाख से ज्यादा पेड़ों की बलि विकास यज्ञ में दी जा रही है। यही नहीं राजस्थान में विकास के नाम पर कहें या सोलर ऊर्जा के नाम पर पिछले वर्षों से खेजड़ी के हजारों - लाखों पेड़ों की हर साल बलि दी जा रही है और यह सिलसिला आज भी बदस्तूर जारी है। वहां बीकानेर में नोखा दइया में खेजड़ी के पेड़ों की कटाई के विरोध में साल 2024 की जुलाई 18 से विरोध स्वरूप धरना जारी है। बीकानेर कलक्ट्रेट पर भी 18 जुलाई 2025 से धरना दे रहे किसान खेजड़ी की कटाई बंद किये जाने और इसका कानून बनाये जाने की मांग पर अड़े हैं। राज्य के लाखों किसान फरवरी माह की 2 तारीख से बीकानेर में महापड़ाव और हजारों महिलाओं का खेजड़ी के पेड़ों के साथ कलश प्रदर्शन कर चुकी हैं। गौरतलब है खेजड़ी के पेड़ों को विश्नोई समुदाय पूजता है। खेजड़ी उनकी आन-बान-शान और अस्तित्व का प्रतीक है। गौरतलब है खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा की खातिर माता अमृता देवी ने शताब्दियों पहले 363 लोगों के साथ बलिदान किया था। किसान खेजड़ी को बचाने हेतु अपना बलिदान देने को उतारू हैं। इसके अलावा चारागाहों पर बढ़ते मानवीय दखल, दुरुपयोग, शहरों के विस्तार, जनसंख्या वृद्धि, बढ़ती खाद्य और ईंधन की मांग और जलवायु परिवर्तन ने संकट को और भयावह बना दिया है। चारागाहों की 12.1 करोड हैक्टेयर जमीन बेकार होने से पालतू और वन्यजीव के सामने अपना पेट भरने की समस्या पैदा हो गयी है। भारत में आधिकारिक आंकड़े कुल वन आच्छादन में स्थिरता दर्शाते हैं, किंतु विशेषज्ञों का मत है कि प्राकृतिक वनों की गुणवत्ता और जैव विविधता का स्तर कम होने की प्रवृत्ति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वृक्षारोपण और प्राकृतिक वन के बीच यही पारिस्थितिक अंतर नीति-निर्माण के केंद्र में होना चाहिए लेकिन इसका अभाव समस्या का अहम कारण है।

पक्षियों और अन्य वन्यजीवों की अनेक प्रजातियां अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ की लाल सूची में संकटग्रस्त श्रेणी में दर्ज हैं। देश में पक्षियों की दुर्लभ 25 प्रजातियां खत्म होने के कगार पर हैं। बीते पांच-छह सालों में देश में पीपल, नीम, महुआ, जामुन, शीशम सहित लगभग 53 लाख छायादार पेड़ों का खात्मा हुआ है। इसके पीछे धान की पैदावार बढ़ाने की किसानों की लालसा है जो इन्हें बाधा मानकर साफ कर रहे हैं। सच्चाई यह है कि महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में मुख्यत खनन, वनोन्मूलन और कृषि विस्तार से, असम, अरुणाचल और मेघालय में अवैध शिकार के चलते आर्किड, बांस और दुर्लभ प्रजातियों की तादाद कम हो रही है। तटीय राज्यों खासकर ओडीसा और गुजरात में औद्योगिक विकास के चलते समुद्री जीवन जैसे कछुए और मैंग्रोव वनों पर खतरा मंडरा रहा है। कीट पतंगों के जोड़े बढ़ती गर्मी के चलते न केवल बिछड रहे हैं बल्कि मौसम उनके मिलन में बाधा पहुंचा रहा है।अब तो बाहरी जीवों की आक्रामक प्रजातियों के एक जगह से दूसरी जगह पर घुसपैठ से भी जैव विविधता को नुकसान पहुंच रहा है। आईपीएबी की रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है। इस तरह की प्रजातियां पर्यावरण, अर्थ व्यवस्था और मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकती हैं। अंतर-सरकारी विज्ञान-नीति मंच ने आक्रामक बाहरी प्रजातियों को जैव विविधता के लिए गंभीर खतरा बताया है, क्योंकि वे स्थानीय पारिस्थितिक संतुलन, अर्थव्यवस्था और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही हैं।

गौरतलब है कि जैव विविधता विनिमय योग्य नहीं है जबकि कार्बन विनिमय योग्य है। यदि किसी स्थान से जैव विविधता का एक अंश खो देते हैं या उसका वहां से ह्रास हो जाता है तो आप उसका एक अंश कहीं और नहीं जोड़ सकते। यह ऐसी मुद्रा नहीं है कि जिसका विनिमय किया जा सके। फिर जल, जंगल और जमीन का प्रश्न केवल हरित आच्छादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है। वास्तविक चुनौती प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्रों की संरचना, उनकी जैविक विविधता और उनकी पुनरुत्पादक क्षमता को सुरक्षित रखने की है। वृक्षारोपण महत्वपूर्ण है, परंतु वह प्राकृतिक वनों का विकल्प नहीं हो सकता। जब तक नीति और विकास की प्राथमिकताओं में इस पारिस्थितिक अंतर को समझकर शामिल नहीं किया जाएगा, तब तक जैव विविधता का संकट गहराता ही चला जाएगा। इसमें दो राय नहीं। ■

धर्म, समाज, परिवार और प्रकृति से जोड़ते अप्रैल के पर्व और उत्सव

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर एवं ट्रेवलर

पंगुनी उथिरम प्रमुख तमिल त्योहार 1 अप्रैल को मनाया जाएगा। यह तमिल महीने पंगुनी की पूर्णिमा को पड़ता है, जब उथिरम नक्षत्र संरेखित होता है। यह दक्षिण भारत, विशेषकर मुरुगन मंदिरों में भगवान मुरुगन और देवयानी के दिव्य विवाह के रूप में बहुत उत्साह से मनाया जाता है। इसलिए इसे 'दिव्य मिलन' का दिन माना जाता है।

उत्तर पूर्व भारत के नागालैंड के मोन जिले में आओलिंग महोत्सव (1 से 6 अप्रैल या 2 से 7 अप्रैल) कोन्याक जनजातियों का पर्व है। ये अपना अधिकतर समय खेती करने और शिकार करने में बिताते हैं। हर साल वसंत को चिहिंत करने के लिए यह त्योहार मनाते हैं। हनुमान जन्मोत्सव (2 अप्रैल) को मंदिरों में सुदंरकाण्ड का पाठ और भण्डारे आयोजित किए जाते हैं।

मोपिन महोत्सव (5 से 7 अप्रैल) अरूणाचल प्रदेश का आनन्दायक उत्सव है। यह फसल उत्सव एलॉन्ग, बसर और बामे के लोगों द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव है। उस समय यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य बहुत मनमोहक होता है।

13 अप्रैल 1699 को श्री केसरगढ़ साहिब आनन्दपुर में दसवें गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी इसलिए सभी गुरुद्वारों में वैसाखी समारोह मनाया जाता है।

वरुथिनी एकादशी (13 अप्रैल) के दिन भगवान श्री हरिहर विष्णु की पूजा की जाती है। ऐसा मानना है कि कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय जो एक मन सोना दान करके पुण्य मिलता है, वही पुण्य इस दिन व्रत करने से मिलता है। श्री वल्लभाचार्य जयंती इस वर्ष उनका 547वां जन्मदिन है। वाराणसी में तेलगु ब्राह्मण परिवार में जन्में महापुरूष के लिए प्रचलित मान्यता है कि भगवान कृष्ण श्रीनाथ जी के रूप में इनके सामने प्रकट हुए थे।

वैसाखी उत्सव फसल कटाई के समय को दर्शाता है और ऐसा माना जाता है कि गंगा नदी वैसाखी को धरती पर अवतरित हुई थी इसलिए इस दिन गंगा स्नान का महत्व है जो नहीं पहुंच सकते, वे अपने आस पास बहने वाली नदी पर जाते हैं। पंजाब में वैसाखी के दिन नदियों के पास ही मेले लगते हैं। सुबह सपरिवार जो भी पास में नदी या बही होती है, वहां स्नान करते हैं। लौटते हुए जलेबी और अंदरसे खाते हैं। लोटे में नदी का जल, गेहूं की पाँच छिंटा (बालियों वाली डंडियां) घर लाकर उस पर कलेवा बांध कर मुख्य द्वार से लटका दिया जाता है और नदी के जल को पूजा की जगह रख दिया जाता है। स्कूलों में भी बाडियां (गेहूं की कटाई) की छुट्टियां हो जाती हैं। फिर सपरिवार कटाई में लग जाते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बैसाख यानि अप्रैल में मनाया जाने वाला बिहू उत्सव है। इस समय बसन्त के कारण प्राकृतिक सौन्दर्य चारों ओर होता है। इसे रोंगाली बिहु या बोहाग बिहू (14 से 20 अप्रैल) भी कहते हैं। एक महीना रात भर किसी न किसी के घर बीहू नृत्य गाना होता है।

शाद सुक मिंसिएम उत्सव (14 अप्रैल) मेघालय का लोकप्रिय त्योहार है। जैसे भारत के अधिकतर हिस्सों में फसल कटाई की खुशी के पर्व हैं। उसी तरह खासी पुरूष और महिलाएं भी रेशमी कपड़ों में और गहनों से सजकर, पुरूष रेशमी धोती, बास्केट, पंख लगी पगड़ी और पारंपरिक आभूषण पहन कर साथ साथ नाचते हैं।

उत्तराखण्ड में बिखोती उत्सव मनाया जाता है जिसमें पवित्र नदी में स्नान करके राक्षस को पत्थर मारने की प्रथा है।

यूनेस्को द्वारा 2016 में मानवता की सांस्कृतिक विरासत के रुप में दर्ज, पाहेला वैशाख (14 या 15 अप्रैल) बंगाल, त्रिपुरा, बांगलादेश में उत्सव पर मंगल शोभा यात्रा का आयोजन होता है। झारखण्ड के आदिवासी, समुदाय के साथ सरहुल मनाते हैं और सरना देवी की पूजा करते हैं। उसके बाद से नया धान, फल, फूल खाते हैं और बीज बोया जाता है। यह माँ प्रकृति की पूजा

और वसंत उत्सव है जो प्रजनन का भी संकेत देता है और शादी विवाह की शुरूआत होती है।

तमिल नववर्ष को पुथांडु उत्सव कहते हैं। तमिल महीने चितराई के पहले दिन पुथांडु, तमिल नाडु, पांडीचेरी, श्रीलंका, मलेशिया, सिंगापुर, मारीशियस में और विश्व में जहां भी तमिलियन हैं, मनाया जाता है। यह आमतौर पर 14 अप्रैल को पड़ता है। इस दिन को तमिल नववर्ष या पुथुवरुशम के नाम से भी जाना जाता है।

चिथिराई महोत्सव, एक महीने 14,15 अप्रैल से मदुरै तमिलनाडु, मदुरै के प्रसिद्ध मंदिर में भगवान सुंदरेश्वर के साथ देवी मीनाक्षी के विवाह के उपलक्ष में मनाया जाता है। जोड़े की मूर्तियों को सजाए गए रथ में शहर के चारों ओर ले जाया जाता है। जिसका लोग बड़े उत्साह से स्वागत करते हैं।

केरल के कोल्लम में प्रसिद्ध कोल्लम पूरम उत्सव का आयोजन 15 अप्रैल को होने की संभावना है। यह केरल की संस्कृति का एक प्रमुख उत्सव है जो भव्य जुलूसों, पारंपरिक संगीत (पंचवाद्यम), और सजे हुए हाथियों के साथ मनाया जाता है, जो इस क्षेत्र का एक प्रमुख आकर्षण है।

ऊटी का मरियम्मन मंदिर उत्सव आमतौर पर हर साल अप्रैल महीने में मनाया जाता है। 2026 के लिए विशिष्ट तिथियों की आधिकारिक घोषणा अभी लंबित है, लेकिन परंपरा के अनुसार यह मध्य अप्रैल 2026 के दौरान होने की उम्मीद है।

अप्रैल पेनकुनी उत्सव यह तिरुवनंतपुरम में 24 मार्च से 2 अप्रैल तक चल रहा है। तमिलनाडु के अन्य क्षेत्रों में मरियम्मन उत्सवों की कुछ तिथियां घोषित हो चुकी हैं, जैसे ओझुगईमंगलम में 5 अप्रैल से 12 अप्रैल तक रथ उत्सव मनाया जाएगा।

केरल का नववर्ष मलियाली महीने मेदान के पहले दिन विशु मनाया जाता है। आसपास के राज्यों के कुछ हिस्सों में भी मनाया जाता है। 14 या 15 अप्रैल को परिवार के साथ मनाते हैं। यह पर्व भगवान विष्णु और उनके अवतार कृष्ण को समर्पित है। इस दिन सार्वजनिक अवकाश होता है। पिछली फसल के लिए भगवान का धन्यवाद किया जाता है और धान की बुआई की जाती है।

कदम्मनिता पदयानी (14 से 23 अप्रैल) यह त्यौहार केरल में राज्य की समृद्ध संस्कृति, कौशल, सजावट, परंपराओं और रंग का शानदार प्रर्दशन है।

भारतीय संविधान के पिता, भारत के महान व्यक्तित्व बाबासाहेब डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का जन्मदिन 14 अप्रैल को धूमधाम से मनाया जाता है। कोल्लम पूरम, कोल्लम (15 अप्रैल) उत्सव की शुरुआत 'चूटु वैपू' अनुष्ठान से होती है, जिसमें मंदिर के पवित्र दीपक से आग जलाई जाती है और पारंपरिक 'थप्पु' वाद्ययंत्र बजाया जाता है।

वैसाखी उत्सव फसल कटाई के समय को दर्शाता है और ऐसा माना जाता है कि गंगा नदी वैसाखी को धरती पर अवतरित हुई थी इसलिए इस दिन गंगा स्नान का महत्व है जो नहीं पहुंच सकते, वे अपने आस पास बहने वाली नदी पर जाते हैं। पंजाब में वैसाखी के दिन नदियों के पास ही मेले लगते हैं। सुबह सपरिवार जो भी पास में नदी या बही होती है, वहां स्नान करते हैं। लौटते हुए जलेबी और अंदरसे खाते हैं।

परशुराम जयंती 19 अप्रैल महर्षि के सम्मान में इस दिन को उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति करने के लिए, जीवन की सुखसुविधाओं का त्याग करने के तरीके के रूप में मनाया जाता है। इसको अक्षय तृतीया भी कहा जाता है, जो नए प्रयास शुरू करने, व्यवसाय शरू करने, सोना खरीदने के लिए यह दिन बहुत शुभ होता है।

बसव जयंती (20 अप्रैल) लिंगायतों द्वारा पारंपरिक रूप से मनाई जाने वाली बसवन्ना की जयंती है जो 12वीं सदी के हिंदू कन्नड़ कवि और दार्शनिक शिव के अनुयायी थे। कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना में मनाया जाता है।

गरिया पूजा (21 अप्रैल) त्रिपुरा में सात दिन तक चलने वाला यह उत्सव है। इसमें गरिया देवता की पूजा होती है जो पशुधन और धन की रक्षा करते हैं। इस दौरान भगवान गरिया को प्रसन्न करने के लिए बच्चे ढोल बजा कर नाचते गाते हैं।

शंकराचार्य जयंती, महान संत प्रसिद्ध दार्शनिक, आदिशंकराचार्य का जन्म केरल के कलाडी क्षेत्र में हुआ था। उन्होंने अद्वैत वेदांत दर्शन के सिद्धांत पर चलकर, हिंदू संस्कृति को तब बचाया, जब हिंदू संस्कृति को संजोय रखने की ज़रूरत थी। रामानुज जयंती, रामानुजाचार्य प्रसिद्ध दक्षिण भारतीय थे। इन्होंने उपनिषदों, ब्रह्म सूत्रों के दर्शन को मिश्रित किया और भक्ति परंपरा को एक मजबूत बौद्धिक आधार दिया।

22 अप्रैल को पर्यावरण सुरक्षा के सर्मथन में विश्व पृथ्वी मनाते हैं। गंगा सप्तमी का त्योहार 23 अप्रैल को गंगा नदी के पृथ्वी पर अवतरण के उपलक्ष्य में मनाया मनाया जाएगा। इस दिन गंगा स्नान और पूजा करना बेहद पवित्र माना जाता है। बगुलामुखी जयंती (24 अप्रैल) इन्हें मां पीताम्बरा या ब्रह्मास्त्र विद्या, आठवीं महाविद्या भी कहा जाता है। देवी की पीली पोशाक और पीला श्रृंगार होता है। तांत्रिक लोग इन्हें बहुत मानते हैं। पीताम्बरा पीठ, दतिया मध्य प्रदेश में और हिमाचल के बगुलामुखी मंदिर में मेला लगता है। सीता नवमी (जानकी जयंती 25 अप्रैल) को मनाई जाएगी। यह वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पड़ती है, जो माता सीता के प्राकट्य दिवस के रूप में मनाया जाने वाला एक अत्यंत पवित्र त्यौहार है। 30 अप्रैल को नरसिंह जयंती, छिन्नमस्ता जयंती मनाई जायेगी। फसल उत्सव, प्रेरणास्रोत महापुरुषों का जन्मदिन, पशुधन और पर्यावरण संरक्षण को विशेष दिनों में मनाना हमारे जीवन को खुशहाल बनाता है। ■

मैदान से स्क्रीन तक : बच्चों का बदलता खेल-संसार

डॉ. शिवानी कटारा
दंत चिकित्सक एवं लेखिका

आधुनिक दौर की तेज रफ्तार जीवनशैली में बच्चों की रुचि मोबाइल, इंटरनेट और ऑनलाइन गेम्स की ओर निरंतर बढ़ रही है। पूर्वकाल में बच्चे स्कूल से लौटकर मैदान में खेलते, साइकिल चलाते और मित्रों संग सक्रिय समय बिताते थे, जिससे उनका शारीरिक व मानसिक विकास सहज रूप से होता था। किंतु आज परिदृश्य बदल चुका है। आधुनिक तकनीक और डिजिटल साधनों की बढ़ती पकड़ ने बच्चों को घर तक सीमित कर दिया है, जहां उनका अधिकांश समय स्क्रीन पर ही व्यतीत होता है। यह बदलाव उनकी जीवनशैली, स्वास्थ्य और सामाजिक व्यवहार पर गहरा असर डाल रहा है। साल 2021 में 29 देशों के 1.88 लाख से अधिक बच्चों पर हुए अध्ययन में पाया गया कि उनका बाहरी समय अनुशंसित 120 मिनट प्रतिदिन से कम है। भारत की स्थिति भी गंभीर है। हालिया शोध बताते हैं कि पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चे प्रतिदिन औसतन 2.2 घंटे स्क्रीन पर बिताते हैं, जबकि इंडियन अकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स केवल एक घंटे की सीमा सुझाती है। इस बढ़ते स्क्रीन टाइम का असर शारीरिक गतिविधियों पर साफ दिखाई देता है। 2018 की एक रिपोर्ट बताती है कि भारत में केवल एक-तिहाई बच्चे और किशोर ही प्रतिदिन कम से कम 60 मिनट की मध्यम से तीव्र शारीरिक गतिविधि (जैसे, तेज चलना, साइकिल चलाना, दौड़, नृत्य, फुटबॉल, तैराकी आदि) कर पाते हैं। शोध के अनुसार, जो बच्चे प्रतिदिन तीन घंटे से अधिक समय स्क्रीन पर बिताते हैं, उनमें मांसपेशियों की कमजोरी, प्रतिरक्षा तंत्र की गिरावट, उच्च रक्तचाप, असामान्य कोलेस्ट्रॉल स्तर और इंसुलिन प्रतिरोध जैसी समस्याएं अधिक पाई जाती है। लखनऊ में हुए एक अध्ययन में भी पाया गया कि 6 से 12 वर्ष के लगभग 30 प्रतिशत बच्चे मोटापे से ग्रस्त हैं। इस प्रवृत्ति के मूल में स्क्रीन के अत्यधिक उपयोग से उत्पन्न निष्क्रिय जीवनशैली तथा असंतुलित आहार। दृष्टि संबंधी समस्याएं भी तेजी से बढ़ रही हैं। एलवी प्रसाद आई इंस्टीट्यूट के अनुसार, यदि यही प्रवृत्ति जारी रही तो 2050 तक भारत में आधे बच्चे मायोपिया (दूर की वस्तुएं धुंधली दिखना) से प्रभावित हो सकते हैं। डिजिटल माध्यमों में निरंतर बदलते दृश्य, ध्वनियां तथा त्वरित प्रतिक्रियाएं बच्चों के मस्तिष्क में डोपामिन का स्तर असामान्य रूप से बढ़ा देती हैं। डोपामिन का यह क्षणिक 'फील-गुड' प्रभाव बच्चों को बार-बार उसी अनुभव की ओर आकर्षित करता है। धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति लत का रूप धारण कर लेती है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चे मोबाइल और गेम से दूरी बनाने में असमर्थ हो जाते हैं। यह स्थिति वास्तविक जीवन की चुनौतियों, जैसे कठिन अध्ययन, खेलों में हार अथवा पारिवारिक संवाद, को बच्चों के लिए अरुचिकर और जटिल बना देती है। शहरी परिप्रेक्ष्य में सुरक्षित मैदानों और पार्कों का अभाव बच्चों को बाहरी गतिविधियों से वंचित करता है। साथ ही शिक्षा प्रणाली का बढ़ता प्रतिस्पर्धात्मक दबाव एवं कोचिंग संस्कृति उन्हें पुस्तकों तक सीमित कर देती है। अभिभावकों की व्यस्त जीवनशैली भी इस प्रवृत्ति को और प्रबल करती है। परिणामस्वरूप, बच्चे धीरे-धीरे बाहरी खेलों, पठन-पाठन के संतुलन और पारिवारिक सहभागिता से कटते जाते हैं। यह प्रवृत्ति केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामाजिक स्तर पर भी हानिकारक है। जब बच्चे मैदान में दोस्तों के साथ खेलते हैं, तो वे सहयोग,

टीमवर्क, धैर्य और सहानुभूति जैसे मूल्य सीखते हैं। हार-जीत की परिस्थितियां उन्हें भावनात्मक रूप से मजबूत बनाती हैं। उदाहरण के तौर पर, क्रिकेट या फुटबॉल जैसे खेल बच्चों को यह सिखाते हैं कि टीम में हर खिलाड़ी की भूमिका महत्वपूर्ण है और जीत-हार दोनों को स्वीकार करना सीखना चाहिए। इसके विपरीत, आभासी दुनिया में बातचीत केवल इमोजी और छोटे संदेशों तक सीमित रह जाती है, जिससे उनके सामाजिक कौशल और भावनात्मक समझ का विकास बाधित हो जाता है। समाधान की दिशा में पहला कदम है-स्क्रीन टाइम पर नियंत्रण। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों के मोबाइल, टीवी और गेम खेलने का समय सीमित करें और उन्हें बाहरी खेलों के महत्व से अवगत कराएं। यूनिसेफ की एक रिपोर्ट भी बताती है कि जो बच्चे रोजाना दो घंटे बाहर खेलते हैं, उनमें शारीरिक सक्रियता लगभग 27 प्रतिशत अधिक पाई जाती है। विशेषज्ञों का तर्क है कि बच्चों के लिए प्रतिदिन कम से कम दो घंटे बाहरी खेलों और धूप में समय बिताना आवश्यक है। यह अभ्यास उनकी शारीरिक फिटनेस को बनाए रखने के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक संतुलन भी प्रदान करता है, जिससे वे अधिक स्वस्थ, ऊर्जावान और आत्मविश्वासी बनते हैं।

वास्तविक जीवन में अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहां परिवार शाम के समय बच्चों के साथ पार्क या मैदान में जाते हैं। इससे न केवल बच्चों की खेल गतिविधियां बढ़ती हैं, बल्कि पारिवारिक संबंध भी प्रगाढ़ होते हैं। अंततः यह स्पष्ट है कि बच्चों के समग्र विकास के लिए बाहरी खेल अनिवार्य हैं। ये केवल शारीरिक और मानसिक संतुलन ही नहीं स्थापित करते, बल्कि सहयोग, सहानुभूति, नेतृत्व, धैर्य और आत्मनिर्भरता जैसे सामाजिक मूल्यों को भी पोषित करते हैं। वास्तविक खेल बच्चों को हार-जीत का अनुभव कराते हैं, जो उन्हें जीवन की चुनौतियों के प्रति अधिक सक्षम और दृढ़ बनाता है। बदलते खेल-संसार में तकनीक का संतुलित उपयोग करते हुए बच्चों को मैदान और पारंपरिक खेलों से जोड़ना ही उनके दीर्घकालिक स्वास्थ्य, सामाजिक संतुलन और उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव स्थापित करता है।

डायबिटीज मरीजों के लिए राहत मेरठ में शुरू हुई मोबाइल स्क्रीनिंग वैन

जो लोग डायबिटीज की वजह से आंखों की बीमारी डायबिटिक रेटिनोपैथी से परेशान हैं और आर्थिक तंगी के कारण इलाज नहीं करा पाते। अब ऐसे मरीजों की मदद के लिए लाला लाजपत राय मेमोरियल मेडिकल कॉलेज के नेत्र रोग विभाग ने नई पहल शुरू की है। मेडिकल कॉलेज ने "डायबिटिक रेटिनोपैथी सेंटर" के तहत एक मोबाइल स्क्रीनिंग वैन शुरू की है। यह वैन गांव-गांव जाकर लोगों की आंखों की जांच करेगी और जरूरत पड़ने पर इलाज की सुविधा भी देगी। इससे दूरदराज के इलाकों में रहने वाले मरीजों को काफी राहत मिलेगी। मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. आर. सी. गुप्ता ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार ने मेरठ के राजकीय मेडिकल कॉलेज के नेत्र रोग विभाग को एडवांस डायबिटिक रेटिनोपैथी सेंटर घोषित किया है। उन्होंने कहा कि डायबिटीज के मरीज तेजी से बढ़ रहे हैं और इसके कारण आंखों की बीमारी डायबिटिक रेटिनोपैथी के मामले भी बढ़ रहे हैं। इसलिए समय पर जांच बहुत जरूरी है। रेटिना विशेषज्ञ डॉ. प्रियांक के अनुसार अगर इस बीमारी की समय रहते जांच और इलाज हो जाए तो आंखों की रोशनी को बचाया जा सकता है। मोबाइल वैन में जूनियर डॉक्टरों की टीम रहेगी, जो आधुनिक मशीनों से मरीजों की आंखों की जांच करेगी और उनकी तस्वीरें भी लेगी। इन तस्वीरों को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से जांचा जाएगा। जिन मरीजों को ज्यादा इलाज की जरूरत होगी, उन्हें मेडिकल कॉलेज बुलाया जाएगा। वहीं जिनकी समस्या हल्की होगी, उनका इलाज मोबाइल वैन में ही निशुल्क किया जाएगा। इससे गांव और शहर दोनों जगह के लोगों को समय पर जांच और इलाज मिल सकेगा।

चलती पाठशाला से बच्चों तक पहुंच रही शिक्षा

नोएडा की एक संस्था उम्मीद की नई किरण बनकर सामने आई है। जी हां, नोएडा की संस्था चैलेंजर्स ग्रुप वंचित बच्चों को पढ़ाई से जोड़ने का काम कर रही है। संस्था की खास पहल 'पाठशाला ऑन व्हील्स' के तहत ई-रिक्शा और बस के जरिए स्लम बस्तियों में जाकर बच्चों को मुफ्त शिक्षा दी जा रही है। ये कक्षाएं उन इलाकों में लगती हैं, जहां आसपास कोई स्कूल नहीं है। संस्था के अध्यक्ष प्रिंस शर्मा बताते हैं कि यह अभियान खोड़ा गांव, सादतपुर, चौड़ा गांव, सलारपुर गांव और गौर सिटी के आसपास चल रहा है। इस पहल से करीब 300 से ज्यादा बच्चे लाभ उठा रहे हैं। बच्चों से किसी तरह की फीस नहीं ली जाती। इस मोबाइल स्कूल की बस को पूरी तरह डिजिटल क्लासरूम बनाया गया है। इसमें स्मार्ट बोर्ड, लैपटॉप, पंखे, लाइट, टेबल और कुर्सियां मौजूद हैं। बस जहां भी जाती है, वहां दो से ढाई घंटे तक बच्चों को पढ़ाया जाता है। बच्चों को हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान और सामान्य ज्ञान के साथ-साथ कंप्यूटर की बेसिक जानकारी भी दी जाती है। उन्हें नोटपैड, वर्डपैड, एक्सेल और पावरपॉइंट जैसे टूल्स सिखाए जाते हैं। साथ ही नैतिक शिक्षा और भारतीय संस्कृति की जानकारी भी दी जाती है। कॉपी, किताब, पेन-पेंसिल और ड्रेस तक बच्चों को मुफ्त दी जाती है। इस पूरी पहल को सफल बनाने में पांच से छह शिक्षक, एक ड्राइवर और एक हेल्पर लगातार मेहनत कर रहे हैं। संस्था पिछले नौ सालों से शिक्षा और जागरूकता से जुड़े कई कार्यक्रम चला रही है। इस पाठशाला में पढ़ने वाले कई बच्चे, जो पहले कभी स्कूल नहीं गए थे, अब पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं। प्रवासी परिवारों के ये बच्चे अब समझने लगे हैं कि शिक्षा ही उनके भविष्य को बेहतर बना सकती है। बच्चों की आंखों में बढ़ता आत्मविश्वास और पढ़ाई के प्रति रुचि ही इस पहल की सबसे बड़ी सफलता है।

स्वरोजगार से आत्मनिर्भर बनीं फिरोजाबाद की महिलाएं

ग्रामीण इलाकों में अब महिलाएं केवल घर तक सीमित नहीं रहीं। वे अपने हुनर और मेहनत के बल पर आत्मनिर्भर बनने की नई कहानियां लिख रही हैं। उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले में भी ऐसी ही एक प्रेरणादायक पहल देखने को मिल रही है, जहां महिलाएं स्वरोजगार अपनाकर न केवल खुद कमाई कर रही हैं, बल्कि दूसरी महिलाओं को भी आगे बढ़ने की राह दिखा रही हैं। फिरोजाबाद जिले के हरगनपुर गांव की रहने वाली रामा देवी ने स्वरोजगार के माध्यम से अपनी जिंदगी की दिशा बदल दी है। पहले उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर थी और घर के काम के बाद भी उन्हें कोई रोजगार नहीं मिल पा रहा था। इसी दौरान उन्हें आजीविका मिशन के तहत चल रहे स्वयं सहायता समूह की जानकारी मिली। समूह से जुड़ने के बाद रामा देवी को अगरबत्ती, धूपबत्ती और मोमबत्ती बनाने की ट्रेनिंग दी गई। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद उन्होंने घर से ही अपना छोटा सा कारोबार शुरू कर दिया। वे चंदन और अन्य सुगंधित सामग्री से अगरबत्ती और धूपबत्ती बनाती हैं, जबकि मोमबत्ती तैयार करने के लिए डाई का प्रयोग करती हैं। एक उत्पाद बनाने में उनका खर्च करीब 2 से 3 रुपये आता है। व्यवसाय शुरू करने के लिए सरकार की ओर से उन्हें 1 लाख 20 हजार रुपये की आर्थिक सहायता भी मिली। इस मदद से उनका काम धीरे-धीरे आगे बढ़ा। आज रामा देवी हर महीने 10 से 20 हजार रुपये तक की आमदनी कर रही हैं। अब रामा देवी अपने गांव की दूसरी महिलाओं को भी स्वयं सहायता समूह से जुड़ने और स्वरोजगार अपनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। उनका कहना है कि अगर महिलाएं ठान लें, तो वे घर बैठे भी अच्छी कमाई कर सकती हैं और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत बना सकती हैं। फिरोजाबाद की यह पहल ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता की प्रेरणा बन रही है। ''

बागेश्वर में शुरू हुई 20 मिनट की ऑनलाइन डिलीवरी सेवा

अगर मन में कुछ नया करने की लगन हो, तो छोटे शहर भी बड़े मौके दे सकते हैं। आज ऑनलाइन डिलीवरी सिर्फ महानगरों तक सीमित नहीं रही। अब पहाड़ और छोटे शहरों के युवा भी इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और अपने क्षेत्र के लोगों को आधुनिक सुविधाएं दे रहे हैं। बागेश्वर के दो भाइयों ने मिलकर रंगीलो मार्ट डॉट कॉम नाम की एक वेबसाइट शुरू की है। इसके माध्यम से वे ग्रॉसरी, होली का सामान, बेकरी और डेयरी आइटम, जूस, सफाई का सामान, गिफ्ट समेत जरूरत का सामान केवल 20 मिनट में घर तक पहुंचा रहे हैं। रंगीलो मार्ट की शुरुआत करने वाले युवा उद्यमी हिमांशु नगरकोटी ने बताया कि उन्होंने करीब 12 साल तक बेंगलुरु में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के तौर पर काम किया। जब वे अपने घर बागेश्वर लौटे, तो उन्होंने सोचा कि क्यों न अपने ही शहर के लिए कुछ नया किया जाए। इसी सोच के साथ उन्होंने अपने भाई के साथ मिलकर रंगीलो मार्ट शुरू करने का निर्णय लिया। हिमांशु के छोटे भाई रोहित नगरकोटी, जो एक जिम ओनर हैं और फिटनेस के क्षेत्र में सक्रिय हैं, इस काम में उनका पूरा सहयोग कर रहे हैं। फिलहाल यह सेवा सरयू पुल से करीब पांच किलोमीटर के दायरे में उपलब्ध है। लोग बिल्कुल उसी तरह ऑर्डर कर सकते हैं, जैसे बड़े ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर करते हैं। हिमांशु बताते हैं कि गूगल पर "रंगीलो मार्ट" सर्च करते ही उनकी वेबसाइट खुल जाती है। यहां से लोग होली के रंग, कपड़े, फल–सब्जी, राशन, साबुन–शैंपू, स्नैक्स, पहाड़ी दालें, डेयरी–बेकरी आइटम, बच्चों का सामान, जूस, कोल्ड ड्रिंक, गिफ्ट, केक, और मसाले तक मंगवा सकते हैं। खास बात यह है कि इस वेबसाइट को हिमांशु ने खुद ही तैयार किया है। आने वाले समय में वे इसका मोबाइल ऐप भी लॉन्च करने की तैयारी में हैं। उनका कहना है कि जिले में ज्यादातर लोग नौकरी या व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं, ऐसे में प्रतिदिन बाजार जाना मुश्किल होता है। इसी समस्या को ध्यान में रखकर उन्होंने यह पहल की। रंगीलो मार्ट को लोगों का अच्छा समर्थन मिल रहा है। भविष्य में काम बढ़ने पर वे अन्य युवाओं को भी रोजगार से जोड़ने की योजना बना रहे हैं।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से आत्मनिर्भर हुई महिलाएं

महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें लगातार कई योजनाएं चला रही हैं। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना और उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाना है। ऐसी ही एक योजना प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना है, जिसके माध्यम से महिलाओं को विभिन्न प्रकार के कौशल सिखाए जा रहे हैं। उत्तराखण्ड के पर्वतीय जिले चमोली में प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत महिलाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है। इस योजना के माध्यम से महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई, जूट बैग बनाना, हस्तशिल्प और अन्य उपयोगी उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अब तक जिले में 200 से अधिक महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण दिया जा चुका है, प्रशिक्षण पूरा करने के बाद महिलाएं छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू कर रही हैं और अपनी आय का स्रोत बना रही हैं। कई महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर काम कर रही हैं, जबकि कुछ महिलाएं व्यक्तिगत स्तर पर अपना रोजगार चला रही हैं। बाजार में जूट के बैग और अन्य हस्तनिर्मित उत्पादों की अच्छी मांग है। इससे महिलाओं को नियमित आमदनी हो रही है और उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है। साथ ही परिवार और समाज में उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को उत्पाद की गुणवत्ता, पैकेजिंग और विपणन से जुड़ी जानकारी भी दी जा रही है, ताकि वे अपने उत्पादों को बड़े बाजार तक पहुंचा सकें। लाभार्थी सीमा नेगी ने बताया कि उन्हें प्रशिक्षण के दौरान मुफ्त में सिलाई सीखने का मौका मिला। अब वह सिलाई मशीन से जूट बैग, महिलाओं के सूट और ब्लाउज सिलकर अच्छी आमदनी कर रही हैं। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार की यह पहल बहुत उपयोगी है। इससे महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं और किसी पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं पड़ती।

जहां वाणी में मर्यादा होती है वहां संबन्धों की मधुरता कभी कम नहीं होती

डॉ. संजय तेवतिया
चिकित्सक

मानव जीवन संबंधों के आधार पर ही विकसित होता है। परिवार, समाज और कार्यस्थल हर स्थान पर हमारा व्यक्तित्व हमारे शब्दों के माध्यम से ही पहचाना जाता है। वाणी केवल ध्वनि नही है, यह मन का दर्पण है। जब किसी व्यक्ति का व्यवहार मर्यादित, संयमित और मधुर होता है, तो वह अपने आसपास एक सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण करता है इसी कारण कहा गया है- "जहां वाणी में मर्यादा होती है, वहां सम्बन्धों की मधुरता कभी कम नहीं होती।" मर्यादित बोली वह है जिसमें अनावश्यक कठोरता, कटुता या अहं का प्रदर्शन नहीं होता। यह वह वाणी है जो दूसरों के सम्मान और भावनाओं का ध्यान रखती है। जब हम बोलते समय इस बात का ख्याल रखते हैं कि हमारे शब्द किसी को चोट न पहुंचाएं, यदि संवाद में मर्यादा न हो, तो चाहे रिश्ता कितना भी मजबूत हो, समय के साथ उसमें दरारें आना स्वाभाविक है। इसलिए वाणी की मर्यादा संबंधों को जोड़ने का सबसे सुंदर सूत्र है। जीवन में कई बार ऐसी स्थितियां आती हैं जब मन में क्रोध, असंतोष या निराशा होती है। इन क्षणों में शब्दों का संतुलन खो जाना बहुत आसान होता है। परंतु यही वह समय होता है जब हमारी वाणी हमारी परिपक्वता का परिचय देती है। संयमित शब्द परिस्थितियां बदल सकते हैं, जबकि कटु शब्द संबंधों कों खंडित कर देते हैं। एक मीठे वचन से किसी का मन जीतना सरल है, उतना ही कठोर वचन से किसी का मन खो देना भी आसान है। इसीलिए संत, सूफी और आचार्य शब्दों की मिठास को आध्यात्मिक साधना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं। संयमित भाषा केवल मीठा बोलना नहीं है, इसके भीतर सत्य, करूणा, सम्मान और धैर्य का संतुलन होता है। कई बार सच बोलना आवश्यक होता है, परंतु सच भी तब स्वीकार्य होता है जब उसे संयमित और संवेदनशील तरीके से व्यक्त किया जाए। कठोर सत्य भी मीठी बोली में कह दिया जाए तो वह व्यक्ति के विकास में सहायक बन जाता है, पर कठोरता से कहा गया सत्य अहंकार का रूप ले लेता है और संबंधों को चोट पहुंचाता है। बोलने की संयमता घर-परिवार में अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वही हमारे सबसे गहरे रिश्ते निर्मित होते हैं। माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बहन इन सभी रिश्तों की नींव बोलचाल पर ही टिकी होती है। यदि घर की बातचीत में कटुता होगी, तो वहां का वातावरण भारी और नकारात्मक बन जाता है। इसके विपरीत, मर्यादित शब्द मनुष्य के सम्मान को बढ़ाते हैं। ऐसा व्यक्ति हर हृदय में स्थान बना लेता है, क्योंकि वह दूसरों का सम्मान करके ही स्वयं का सम्मान अर्जित करता है। जो व्यक्ति अपनी भाषा पर नियंत्रण रखता है, वह अपने मन पर भी नियंत्रण सीख जाता है और यही आध्यात्मिक उन्नति का आधार है। अंततः वाणी हमारे जीवन की बड़ी शक्ति है। मनुष्य जो कुछ भी रचता है, उसके पीछे उसके शब्दों की ऊर्जा होती है। इसीलिए यह आवश्यक है कि हम हर परिस्थिति में यह समझें कि शब्द एक बार मुख से निकल जाए, तो वापस नहीं लौटते, पर उनका प्रभाव लंबे समय तक बना रहता है। मर्यादित वाणी ही प्रेम, सम्मान और विश्वास के बीज बोती है और इन्हीं बीजों से जीवन में मधुरता के फूल खिलते हैं। जीवन में रिश्ते बहुत खास और अहमियत का भाव लिए होते हैं। हमारे सुख-दुख के सच्चे साथी हमारे अपने ही हैं और उनकी इज्जत और भावनाओं का ख्याल रखना हम सब की जिम्मेदारी है।

विभिन्न मंचों से प्रेरणा विचार पत्रिका का विमोचन

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2026-27-28

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
दूरभाष: 0120–4545608
ई–मेल: ssm.noida@gmail.com
वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

- भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
- नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
- आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
- प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
- सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
- विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

प्रदीप भारद्वाज	राजीव नाईक	जितेन्द्र गौतम	देवेन्द्र शर्मा
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)